हिन्दी साप्ताहिक

वॉयस ऑफ कैपिटल

RN I NO. UPHIN/2019/78747

दूसरों के घर जाकर
पंचायती वही करते हैं
जिन्हें खुद के घर में
कोई इज्जत नहीं मिलती

वर्ष– 06 अंक – 20 | लखनऊ, शनिवार 28 दिसम्बर 2024 | मूल्य–1 रूपया | पृष्ठ–8

संक्षिप्त समाचार

री–एग्जाम की मांग पर अड़े बीपीएससी अभ्यर्थी, खान सर का मिला समर्थन

एजेंसी

पटना। बिहार में बीपीएससी परीक्षा का मुद्दा गरमाया हुआ है। छात्र लगातार सड़कों पर प्रदर्शन कर रहे हैं। बीपीएससी परीक्षा दोबारा कराने की मांग कर रहे हैं लेकिन सरकार की तरफ से अबतक कोई प्रतिक्रिया सामने नहीं आई है। और अब शिक्षक खान सर भी छात्रों के समर्थन में मैदान में उत्तर आए हैं। उन्होंने पटनाध रना दे रहे बीपीएससी अभ्यर्थियों से मुलाकात की। खान सर ने परीक्षार्थियों को भरोसा दिलाया कि वो उनके साथ खड़े हैं, साथ ही यह भी कहा कि हम सब आयोग से केवल दोबारा परीक्षा की मांग कर रहे हैं। आयोग को जितनी मुश्किल और कठोर परीक्षा लेनी है वो ले सकते हैं। इससे हम नहीं भागेंगे। खान सर ने यह तक कहा कि हम कह रहे हैं कि मुश्किल से मुश्किल परीक्षा लो और बच्चों वाले सवाल मत दो। इससे ज्यादा मुश्किल तो हमारे क्लास टेस्ट के सवाल होते हैं।

नीतीश कुमार ने बीच में रद्द की प्रगति यात्रा, अब दूसरे चरण में जाएंगे मुजफ्फरपुर और वैशाली

एजेंसी

पटना। पूर्व प्रधानमंत्री मनमोहन सिंह के आकस्मिक निधन के मद्देनजर बिहार के मुख्यमंत्री नीतीश कुमार ने अपनी प्रगति यात्रा के पहले चरण को बीच में ही रद्द कर दिया है। उनका शुक्रवार को मुजफ्फरपुर और शनिवार को वैशाली जाने का कार्यक्रम था। बिहार सरकार की तरफ से जारी अधिसूचना में बताया गया है कि अब नीतीश कुमार दूसरे चरण में 5 जनवरी को मुजफ्फरपुर और 6 जनवरी को वैशाली जाएंगे। पहले 4 जनवरी से शुरू हो रहे दूसरे चरण के तहत 5 और 6 जनवरी को वह पटना में ही रहने वाले थे। डॉ. मनमोहन सिंह के निधन पर घोषित राजकीय शोक को देखते हुए उनका यह कार्यक्रम रद्द किया गया है। शुक्रवार को प्रगति यात्रा को लेकर मुख्यमंत्री नीतीश कुमार मुजफ्फरपुर के जिलाधिकारी से लगातार संपर्क में रहे। निर्धारित स्थल पर सभी लोग पहुंचे भी थे। लेकिन, इसके बाद अधिसूचना जारी कर उनके दौरे को स्थगित करने की जानकारी दी गई।

पीएम मोदी रविवार को गाजियाबाद में नमो भारत ट्रेन को दिखाएंगे हरी झंडी

एजेंसी

गाजियाबाद। प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी रविवार (29 दिसंबर) को साहिबाबाद से आनंद विहार स्टेशन तक नमो भारत ट्रेन को हरी झंडी दिखाएंगे। इसके मद्देनजर गाजियाबाद में सुरक्षा बढ़ा दी गई है। अधिकारियों के मुताबिक, इस कार्यक्रम की तैयारी के लिए गाजियाबाद पुलिस ने आठ थाना क्षेत्रों को ड्रोन रहित क्षेत्र घोषित किया है। प्रधानमंत्री के दौरे के दौरान अधिकतम सुरक्षा सुनिश्चित करने के लिए कोतवाली, मधुबन बापूधाम, नंदग्राम, लिंक रोड, साहिबाबाद, इंदिरापुरम, सिहानी गेट और कौशांबी थाना क्षेत्रों में ड्रोन उड़ाने पर प्रतिबंध लगा दिया गया है। पुलिस ने कानून–व्यवस्था बनाए रखने के लिए भारतीय नागरिक सुरक्षा संहिता की धारा 163 (उपद्रव या खतरे की आशंका के तत्काल मामलों

में आदेश जारी करने की शक्ति) भी लागू की है। पुलिस ने बताया कि पूरे शहर में सुरक्षा व्यवस्था कड़ी कर दी गई है और हम जल्द ही कार्यक्रम के दौरान सुचारू आवाजाही के लिए मार्ग परिवर्तन योजना जारी करेंगे। नमो भारत ट्रेनें भारत की भविष्य की क्षेत्रीय रैपिड ट्रांजिट प्रणाली का हिस्सा हैं, जो आधुनिक, हाई–स्पीड कनेक्टिविटी प्रदान करती हैं। स्मार्ट टिकटिंग, आरामदायक सीटिंग और बेहतर सुरक्षा प्रणालियों जैसी उन्नत सुविधाओं से लैस इन ट्रेनों का उद्देश्य शहरी क्षेत्रों में यातायात की भीड़ और प्रदूषण को कम करते हुए एक सहज यात्रा अनुभव प्रदान करना है। साहिबाबाद और दुहाई डिपो के बीच आरआरटीएस का पहला 17 किलोमीटर का प्राथमिकता वाले खंड का 20 अक्टूबर, 2023 को मोदी ने उद्घाटन किया था। वर्तमान में नमो भारत सेवाएं साहिबाबाद, गाजियाबाद, गुलधर, दुहाई, दुहाई डिपो, मुरादनगर, मोदी नगर दक्षिण, मोदी नगर उत्तर और मेरठ दक्षिण सहित नौ स्टेशनों तक 42 किलोमीटर के गलियारे में संचालित होती हैं।

शाही जामा मस्जिद के सामने बनेगी पुलिस चौकी, संभल हिंसा के बाद प्रशासन का बड़ा फैसला

एजेंसी

संभल। जिले में 24 नवंबर को हुई हिंसा के बाद पुलिस प्रशासन ने कड़े कदम उठाते हुए कोट पूर्वी मोहल्ले में स्थित शाही जामा मस्जिद के सामने नयी चौकी बनाने का फैसला लिया है, जिसके तहत जमीन की नपाई काम काम शुरू हो गया है। अपर पुलिस अधीक्षक श्रीश चंद्र ने यह जानकारी दी। हालांकि चौकी का नाम क्या होगा इसे लेकर उन्होंने अभी कुछ भी बताने से इनकार कर दिया। संभल में सुरक्षा की दृष्टि से नयी पुलिस चौकी का निर्माण कार्य कराया जा रहा है, जहां 24 घंटे पुलिस तैनात रहेगी।

पीएम मोदी, गृह मंत्री अमित शाह ने पूर्व पीएम के आवास पहुंच श्रद्धांजलि अर्पित की

एजेंसी

नयी दिल्ली। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी और गृहमंत्री अमित शाह पूर्व पीएम मनमोहन सिंह के आवास पर उनके पार्थिव शरीर के अंतिम दर्शन करने पहुंचे। उनके साथ बीजेपी अध्यक्ष जेपी नड्डा भी मौजूद थे। मनमोहन सिंह का गुरुवार रात निधन हो गया था। प्रधानमंत्री मोदी, गृहमंत्री शाह और केंद्रीय मंत्री नड्डा ने पूर्व पीएम के परिजनों संग मिल शोक संवेदना व्यक्त की। डॉ. मनमोहन सिंह का पार्थिव शरीर शनिवार को कांग्रेस मुख्यालय में रखा जाएगा, जहां आम लोग उन्हें श्रद्धांजलि अर्पित करेंगे। इसके बाद उनके अंतिम संस्कार का आयोजन राजघाट के पास किया

जाएगा। मनमोहन सिंह साल 2004 से 2014 तक दो बार प्रधानमंत्री रहे थे। उनकी गिनती देश के बड़े अर्थशास्त्रियों में होती थी। पूर्व पीएम मनमोहन सिंह की निधन की खबर मिलने के बाद एम्स के बाहर भारी संख्या में दिल्ली पुलिस और अर्धसैनिक बल के जवानों की तैनाती की गई है।

बेलगावी में कांग्रेस अधिवेशन में शामिल नेताओं ने पूर्व पीएम मनमोहन सिंह के निधन पर जताया शोक

एजेंसी

बेलगावी। पूर्व प्रधानमंत्री डॉ मनमोहन सिंह के निधन के बाद कर्नाटक के बेलगावी में कांग्रेस के अधिवेशन में शामिल सभी नेता अब राष्ट्रीय राजधानी दिल्ली के लिए रवाना हो चुके हैं। इस बीच, अधिवेशन में शामिल पार्टी नेताओं ने अपने वरिष्ठ नेता के निधन पर शोक जताया और उनके योगदान को किया। कांग्रेस के नेता सचिन पायलट ने डॉ मनमोहन सिंह के निधन को एक युग का अंत बताते हुए कहा कि उन्होंने विभिन्न पदों पर रहते हुए देश के विकास में अहम योगदान दिया, जिसे हमेशा याद किया जाएगा। उन्होंने अपने पूरे जीवनकाल में देश को प्रथम स्थान पर रखा। वह भारत मां के सच्चे सपूत थे। मेरा सौभाग्य रहा कि मुझे उनके कैबिनेट में काम करने का मौका मिला। मेरी संवेदना उनके परिवार के प्रति है। अधिवेशन में शामिल कांग्रेस के वरिष्ठ नेता सुशील कुमार शिंदे ने कहा कि मैंने उनके साथ काम किया।

मैं उनकी टीम का हिस्सा रहा हूं। उन्होंने आगे कहा कि मनमोहन सिंह बहुत ही सहज प्रवृत्ति के नेता थे। उनके जैसा नेता मिलना मौजूदा राजनीति में मुश्किल है। उन्होंने हमेशा ही दूसरों को आगे बढ़ाने का काम किया। हम सभी के लिए दुख की बात है कि पूरे देश को आर्थिक नीति प्रदान करने वाला नेता आज हमारे बीच से चला गया, आज हम उन्हें श्रद्धांजलि अर्पित करते हैं। उनके योगदान को कभी नहीं भुलाया जा सकता है। कांग्रेस के वरिष्ठ नेता वी नारायण स्वामी ने भी पूर्व प्रधानमंत्री मनमोहन सिंह के निधन पर शोक व्यक्त किया। उन्होंने कहा कि यह हमारे लिए दुख की बात है कि प्रख्यात अर्थशास्त्री और आधुनिक भारत के शिल्पकार आज हमारे बीच नहीं रहे। वह एक महान दार्शनिक थे। वित्त मंत्री रहते हुए डॉ मनमोहन सिंह ने देश के आर्थिक सुधारों में अहम योगदान दिया, ताकि भारत विकसित राष्ट्रों के साथ मुकाबला कर सके। उन्होंने हर क्षेत्र में खुद को साबित किया।कांग्रेस नेता ने कहा कि मैं उनके साथ अपने साथ हुए पुरानी घटनाओं को नहीं भूल सकता हूं। मुझे आज भी याद है, जब हमारे इसरो के वैज्ञानिक अपने दो मिशन को पूरा करने में विफल रहे थे, तो मुझे मनमोहन सिंह ने कहा था कि आप इसरो के वैज्ञानिकों के पास जाइए और उन्हें उत्साहित कीजिए कि वो अपने मिशन को जारी रखे।

सम्पादकीय

डॉ मनमोहन सिंह के प्रति इतिहास आखिर क्यों दयालु होगा?

पूर्व प्रधानमंत्री डॉ मनमोहन सिंह अब नहीं रहे, लेकिन पिछले 10 वर्षों से उनकी एक पंक्ति मुझे रह–रह कर चुभती आई है। वह यह कि वर्तमान मीडिया से ज्यादा इतिहास उनके प्रति दयालु होगा। चूंकि मैं इतिहास स्नातकोत्तर का विद्यार्थी रहा हूँ और पेशेवर मीडिया कर्मी भी हूँ, इसलिए उनकी बात और उसके मर्म को भलीभांति समझता हूं। इसलिए अमूमन सोचता रहता हूँ कि आखिर डॉ सिंह ने इतनी तल्ख टिप्पणी क्यों की? याद दिला दें कि जनवरी 2014 में एक प्रेस कॉन्फ्रेंस के दौरान तत्कालीन प्रधानमंत्री डॉ मनमोहन सिंह ने कहा था कि ष्मैं मानता हूं कि अभी की मीडिया की तुलना में इतिहास मेरे प्रति दयालु होगा।ष इसलिए यह यक्ष प्रश्न स्वाभाविक है कि आखिर डॉ मनमोहन सिंह के प्रति इतिहास क्यों दयालु होगा? किस स्तर तक यानी कितना होगा? और उन बातों–जज्बातों को जिन्हें खुद उन्होंने मुखरित होकर उठाया, या फिर मीडिया के उठाने के बावजूद भी उन पर चुप्पी साध ली, उसके बारे में इतिहास विद किस निष्कर्ष पर पहुंचेंगे, वस्तुनिष्ठ अवलोकन करना जरूरी है। ऐसा इसलिए कि पत्रकारिता भी तो आज का इतिहास ही है। यह हर रोज गुजश्ते इतिहास का जीता–जागता सबूत है। कभी कभी तो वह खुद को दोहराता भी है, जैसा कि इतिहास बेकन ने कहा है। इसलिए सहज ही सवाल उठता है कि क्या मीडिया नासमझ है और इतिहास वस्तुनिष्ठ, जिस पर पक्षपात के आरोप लगते आए हैं! या फिर वो यानी डॉ सिंह जज्बाती, जिन्होंने मैडम (सोनिया गांधी) का यस मैन बनकर अपनी सियासत तो चमका ली, अपने युगान्तकारी नीतियों–रणनीतियों से कुछ लोगों को लाभान्वित भी कर गए! लेकिन जब एक शासक के रूप में राष्ट्रीय प्रतिष्ठा को बचाने और आतंकवादियों व उनके आकाओं के खिलाफ सख्त प्रशासनिक फैसले लेने की जरूरत आई तो किंकर्तव्यविमूढ़ बन बैठे। वहीं, राष्ट्रीय संसाधनों पर अल्पसंख्यकों के पहले अधिकार की बात छेड़कर बहुसंख्यक समाज के आंखों की किरकिरी बन बैठे। चाहे आरक्षण हो या बेरोजगारी, इसका समुचित समाधान अपने 10 वर्षीय शासनकाल में भी नहीं दे पाए, जिसके चलते एक बार राहुल गांधी भी उनसे नाखुश प्रतीत हुए और उसके बाद ही उन्हें चुनावी हार का भी सामना करना पड़ा। बावजूद इसके जब उनसे जुड़ी विभिन्न बातों को यदि समय की कसौटी पर कसा जाए, उनके विचारों और व्यवहारों को परखा जाए तो उपर्युक्त तीनों बातें सही हैं। इसके बावजूद, डॉ सिंह का पलड़ा इसलिए भारी है, क्योंकि वह स्वभाव से मृदु, पेशेवर तौर पर ईमानदार और राजनीतिक रूप से सदाशयी और स्पष्टवादी व्यक्ति थे। जिस दौर में उन्होंने सियासत की, जैसा उन्होंने कांग्रेस/यूपीए परिवार का विश्वास और भरोसा हासिल किया और जिन मानवीय मूल्यों को निभाया, उसमें वो सौ प्रतिशत खरे हैं। हां, इतना अवश्य है कि जब चांद भी बेदाग नहीं समझा जाता तो यह शसियासी चांदश भी 26/11 जैसी दुर्भाग्यपूर्ण घटनाओं के बाद आक्रामक कार्रवाई न करने के लिए जनमानस के कठघरे में खड़ा है! वहीं, देश के संसाधनों पर पहला अधिकार अल्पसंख्यकों का है, का राग अलापकर अपने धवल इतिहास में भी उलाहना के कुछ पंक्तियों को सुनने के लिए हमेशा समुपस्थित रहेगा। बातें बहुत सारी हैं, जिन्हें गागर में सागर की तरह समाया नहीं जा सकता। फिर भी इतिहास के एक अध्ययनकर्ता के रूप में और मीडिया कर्मी के रूप में भी मैं कांग्रेस के इन विचारों से सहमत हूँ कि डॉ. मनमोहन सिंह को उनके गरिमामय आचरण, सार्वजनिक सेवा के प्रति प्रतिबद्धता, गहन ज्ञान और विनम्रता के लिए हमेशा याद रखेगा। इस बात में कोई दो राय नहीं है कि वह अपने पीछे आर्थिक सुधारों, राजनीतिक स्थिरता और प्रत्येक भारतीय के जीवन के उत्थान के लिए समर्पण की विरासत छोड़ गए हैं। पहले एक टेक्नोक्रेट के रूप में, उसके बाद अर्थशास्त्री के रूप में और फिर भारत के प्रधान मंत्री के रूप में उनका कार्यकाल सामाजिक कल्याण पर ध्यान देने के साथ आर्थिक समृद्धि और विश्व मानचित्र पर भारत की स्थिति को मजबूत करने के लिए याद किया जाएगा। कहना न होगा कि अपने शांत लेकिन लचीले नेतृत्व के लिए जाने जाने वाले, वह एक सिद्धांतवादी व्यक्ति थे जिन्होंने देखभाल, चिंता और देश के कल्याण के अलावा किसी भी चीज़ के प्रति दृढ़ प्रतिबद्धता के साथ कठोर निर्णय लिए। एक नेता के रूप में, डॉ. सिंह ने शायद ही कभी सुर्खियां बटोरीं हों, फिर भी उनके फैसले भारतीय समाज के हर पहलू और उससे परे गहराई से गूंजते रहे। इस तरह से राजनीतिक सहयोगियों, विरोधियों और विश्व नेताओं से उन्होंने जो विश्वास और सम्मान अर्जित किया, वह उनके गहरे प्रभाव का प्रमाण है। देखा जाए तो प्रख्यात अर्थशास्त्री डॉ. मनमोहन सिंह भारत के 13 वें प्रधानमंत्री थे। वो लोकसभा चुनाव 2009 में मिली जीत के बाद, जवाहरलाल नेहरू के बाद भारत के पहले ऐसे प्रधानमंत्री बने, जिन्हें पांच वर्षों का कार्यकाल पूरा करने के बाद लगातार दूसरी बार प्रधानमन्त्री बनने का अवसर मिला था। वहीं, उन्हें 22 जून 1991 से 16 मई 1996 तक पीवी नरसिंह राव के प्रधानमंत्रित्व काल में वित्त मंत्री के रूप में किए गए आर्थिक सुधारों का श्रेय दिया जाता है। उन्होंने पंजाब विश्वविद्यालय से स्नातक और स्नातकोत्तर स्तर की पढ़ाई पूरी की। इसके बाद वह कैम्ब्रिज विश्वविद्यालय गए, जहां से उन्होंने पीएचडी की उपाधि हासिल की। फिर उन्होंने ऑक्सफोर्ड विश्वविद्यालय से डी–फिल भी किया। उनकी पुस्तक इंडियाज एक्सपोर्ट ट्रेंड्स एंड प्रोस्पेक्ट्स फॉर सेल्फ सस्टेंड ग्रोथ भारत की व्यापार नीति की पहली और सटीक आलोचना मानी जाती है। डॉ. सिंह ने अर्थशास्त्र के अध्यापक के तौर पर काफी ख्याति अर्जित की। वह पंजाब विश्वविद्यालय और बाद में प्रतिष्ठित दिल्ली स्कूल ऑफ इकनामिक्स में प्राध्यापक रहे। इसी बीच वह संयुक्त राष्ट्र व्यापार और विकास सम्मेलन सचिवालय में सलाहकार भी रहे और 1987 और 1990 में जेनेवा में साउथ कमीशन में सचिव भी रहे। 1971 में डॉ. सिंह भारत के वाणिज्य एवं उद्योग मंत्रालय में आर्थिक सलाहकार के तौर पर नियुक्त किए गए। इसके बाद 1972 में उन्हें वित्त मंत्रालय में मुख्य आर्थिक सलाहकार बनाया गया।

दूर तलक जायेगा बेलगावी का संदेश

कर्नाटक के बेलगावी में आयोजित अपने दो दिवसीय अधिवेशन के पहले दिन कांग्रेस ने भारतीय जनता पार्टी सरकार के खिलाफ लड़ाई तेज करने का निश्चय किया है। अधिवेशन के पहले ही दिन कांग्रेस प्रमुख मल्लिकार्जुन खड़गे ने ऐलान किया है कि हम नेहरू–गांधी की विचारधारा, बाबा साहेब अंबेडकर के सम्मान के लिए आखिरी सांस तक लडेंगे। इसके साथ ही कुछ महत्वपूर्ण निर्णय कांग्रेस ने लिए हैं। जिसमें संगठन को मजबूत करने के साथ–साथ चुनाव प्रक्रिया में सुधार लाने, किसानों के हितों की रक्षा करने, भ्रष्टाचार के खिलाफ लड़ाई को तेज करने की रणनीति बनाई जाएगी। श्री खड़गे ने कहा है कि 2025 संगठन को मजबूत करने का साल होगा, पार्टी में खाली पदों को भरा जाएगा। उदयपुर घोषणापत्र को पूरी तरह लागू किया जाएगा। पार्टी को चुनाव जीतने के लिए आवश्यक कौशल से लैस किया जाएगा। साथ ही वैचारिक रूप से प्रतिबद्ध लोगों को ढूंढा जाएगा जो संविधान और भारत के विचार की रक्षा करेंगे।खड़गे ने कहा कि केवल कड़ी मेहनत पर्याप्त नहीं, समय पर ठोस रणनीति, सही दिशा, नई शक्ति, नेतृत्व को मौका देने की जरूरत है। हमारे पास गांधी–नेहरू की विरासत है। बेलगाव से नए संकल्प के साथ लौटेंगे, यह भरोसा श्री खड़गे ने जताया। वहीं कांग्रेस संसदीय दल की अध्यक्ष सोनिया गांधी इस अधिवेशन में शामिल नहीं हो पाईं, लेकिन अपने संदेश में उन्होंने कहा कि दिल्ली में सत्ता में बैठे लोगों से महात्मा गांधी की विरासत खतरे में है। जिन संगठनों ने कभी स्वतंत्रता के लिए लड़ाई नहीं लड़ी, उन्होंने महात्मा गांधी का कटु विरोध किया, विषाक्त वातावरण बनाया जिसके कारण उनकी हत्या कर दी गई। आइए हम व्यक्तिगत रूप से, सामूहिक रूप से, पार्टी के सामने आने वाली चुनौतियों का सामना करने के लिए तत्परता की नई भावना के साथ संकल्प के साथ आगे बढ़ें। गौरतलब है कि ठीक सौ वर्ष पूर्व इसी स्थल पर कांग्रेस का एक अत्यंत महत्वपूर्ण अधिवेशन हुआ था जो महात्मा गांधी द्वारा की गयी सदारत का पार्टी का एकमेव अधिवेशन है। जिस प्रकार से उस अधिवेशन में गांधीजी ने आपसी भेदभाव भुलाकर फिरंगियों के खिलाफ लड़ाई तेज करने और आजादी हासिल करने तक शांत न बैठने का आह्वान किया था, इस अधिवेशन में भी कांग्रेस ने संकल्प लिया कि जनविरोधी और निरंकुश हो चुकी भाजपा सरकार के खिलाफ देशव्यापी आंदोलन चलाया जायेगा। इस अधिवेशन के लिये कांग्रेस ने अपना घोष वाक्य जय बापू–जय भीम–जय संविधान निर्धारित किया है, जो अपने आप में यह बतलाने के लिये काफी है कि पार्टी गांधीवादी मूल्यों के साथ संविधान को बचाने के लिये देश में बड़ी लड़ाई लड़ेगी। लोकसभा के लगातार तीन चुनाव जीतते हुए पिछले 11 वर्षों के दौरान प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के नेतृत्व में भाजपा ने जिस तरह से सारी शक्तियों का केन्द्रीकरण किया है और निरंकुश कार्य पद्धति अपना रखी है, उसके विरूद्ध कांग्रेस संसद के भीतर व बाहर संघर्ष तो छेड़े हुए ही है, उसने इस अधिवेशन में जो संकल्प लिये हैं वह उसी लड़ाई को तेज व धारदार करेगी। उम्मीद की जानी चाहिये कि संगठन को नया रूप देते हुए नवसंकल्पों के साथ पार्टी बेलगावी से निकलेगी और पूरे देश में अपने निश्चयों को पूरा करने हेतु जी–जान से जुट जायेगी। नव सत्याग्रह के नाम से आयोजित बेलगावी अधिवेशन ऐसे समय में हो रहा है जब देश अनेक तरह के अच्छे–बुरे घटनाक्रमों के बीच से होकर गुजर रहा है। जो सामने दिख रहा है, वह यह कि 11 वर्षों में मोदी एंड कम्पनी ने लोकतांत्रिक व संसदीय मर्यादाओं तथा परम्पराओं को तार–तार कर दिया है, तमाम संवैधानिक संस्थाओं को शक्तिहीन कर देश पर एकछत्र राज कायम किया है और लोकहितों को पूरी तरह से उपेक्षित करते हुए एक बदहाल देश खड़ा कर दिया है। इतना ही नहीं, विरोध की आवाज को बन्द करने के लिये उसने न केवल विपक्षी दलों में अनैतिक तरीकों से तोड़–फोड़ की है, बल्कि प्रेस की आजादी को भी कुचलकर रख दिया है। मोदी एवं केन्द्रीय गृह मंत्री अमित शाह द्वारा देश में लोकतंत्र को नेस्तनाबूद करने के लिये घृणित अभियान चलाये गये। उन्होंने पहले श्कांग्रेस मुक्त भारतश और फिर विपक्ष मुक्त भारत के न केवल नारे दिये बल्कि उन्हें जमीनी स्तर पर उतारने के लिये ऑपरेशन लोटस चलाया। विपक्षी नेताओं को लालच देकर या केन्द्रीय जांच एजेंसियों के जरिये डरा–धमकाकर अपनी पार्टी में शामिल किया और विरोधी दलों की निर्वाचित कई सरकारें गिराई गयीं। अपनी नापाक करतूतों को डबल इंजन सरकार का नाम देकर देश के संघीय ढांचे को ध्वस्त किया गया है। फिलहाल जो मुद्दा सर्वाधिक गरमाया हुआ है, वह है 17 दिसम्बर को राज्यसभा में अमित शाह द्वारा संविधान निर्माता डॉ. बाबा साहेब भीमराव का अपमान करना। इसे कांग्रेस ने संसद के भीतर व बाहर जोरदार ढंग से उठाया है। सम्पूर्ण विपक्ष सहित उसने शाह की माफी व इस्तीफे की मांग की है, जिसे मानना तो दूर मोदी समेत सारा सत्ता पक्ष शाह के बचाव में उतर आया है। इसे लेकर राष्ट्रव्यापी प्रदर्शन भी कांग्रेस ने आयोजित किया। इस विमर्श को उसका आगे बढ़ाना इसलिये स्वाभाविक है क्योंकि धर्मनिरपेक्षता पर आधारित समतामूलक व न्यायपूर्ण समाज की स्थापना के लिये बनाया गया संविधान एक तरह से कांग्रेस की ही देश को सौगात है। पहले प्रधानमंत्री जवाहरलाल नेहरू के नेतृत्व में जो अंतरिम सरकार बनी थी, उसने ही अंबेडकर को कानून मंत्री बनाया था तथा उनकी अध्यक्षता में बने इस संविधान को लागू किया था। इसलिये कांग्रेस के लिये अंबेडकर का अपमान स्वाभाविकतरू संविधान का अपमान है, संविधान की अवमानना निश्चित ही लोकतंत्र की अवमानना है तथा लोकतंत्र की हिकारत अंततः देश की हिकारत है, हमारी पूरी संसदीय प्रणाली का अपमान है। अधिवेशन में कांग्रेस ने तय किया कि जब तक शाह क्षमा नहीं मांगते और पीएम उन्हें मंत्रिमंडल से बर्खास्त नहीं करते, कांग्रेस अपनी मांग पर अटल रहेगी। वैसे इस शाह विरोधी आंदोलन को व्यक्तिगत स्तर पर नहीं बल्कि मुद्दे के स्तर पर देखा जाना चाहिये क्योंकि पिछले कुछ समय से कांग्रेस ने सामाजिक न्याय का जो परचम लहराया है, अंबेडकर का सम्मान उसी से जुड़ा हुआ है। आरक्षण तथा दलित–पिछड़े–आदिवासियों आदि के खिलाफ भाजपा की मानसिकता शाह के बयान से उजागर हुई है। उपरोक्त सारे तथ्यों व पार्श्वभूमि को ध्यान में रखते हुए कांग्रेस कार्यसमिति की बैठक में संगठन को मजबूत करने का भी तय किया गया। निश्चित रूप से यह भी समय की मांग है।

सरकार अर्थव्यवस्था और व्यापार की कमान संभालती है रिजर्व बैंक नहीं

नन्तू बनर्जी

रिजर्व बैंक के नये गवर्नर संजय मल्होत्रा, जो एक पेशेवर नौकरशाह और पूर्व राजस्व सचिव हैं, से मुद्रास्फीति को नियंत्रित करने, घरेलू मुद्रा को स्थिर करने, विदेशी मुद्रा नियंत्रण और आर्थिक विकास को बढ़ावा देने जैसे केंद्रीय बैंक प्रमुख के प्रमुख कार्यों को पूरा करने के मामले में बहुत उम्मीद करना अनुचित होगा। यदि 2014 के बाद से रिजर्व बैंक के तीन पूर्ववर्ती गवर्नर – रघुराम राजन, उर्जित पटेल और शक्तिकांत दास – उन उद्देश्यों को पूरा करने में सक्षम नहीं थे, तो यह उम्मीद करने का कोई कारण नहीं है कि वर्तमान रिजर्व बैंक गवर्नर का प्रदर्शन बहुत अलग होगा। शक्तिकांत दास, जो एक पेशेवर नौकरशाह और पूर्व वित्त सचिव भी हैं, का रिजर्व बैंक गवर्नर के रूप में दूसरा सबसे लंबा कार्यकाल था। इसके बावजूद दास ने मूल्य और मुद्रास्फीति को रोकने में बहुत कम सफलता हासिल की, खासकर मजदूरों से जुड़े वस्तुओं के मामले में, जैसे खाद्यान्न, वस्त्र, दूध, साबुन, चीनी आदि,जो देश की 70 प्रतिशत से अधिक आबादी वाले निम्न और मध्यम आय वर्ग को चिंतित करते हैं। वह रुपये के विनिमय मूल्य में गिरावट को भी नहीं रोक पाये, तथा बड़े पैमाने पर प्रत्यक्ष विदेशी निवेश, आवक और जावक दोनों तरह से धन प्रवाह के प्रवाह, एवं व्यापार और आर्थिक विकास को भी स्थिर नहीं रख सके। इसके विपरीत चिंताजनक रूप से, रुपया–अमेरिकी डॉलर विनिमय समता 2014 से 40 प्रतिशत से अधिक गिर गयी है। एक अमेरिकी डॉलर के लिए विनिमय दर60.34 रुपये से बढ़कर अब 85 रुपये से अधिक हो गयी है। निश्चित रूप से यह आरबीआई गवर्नर के अधिकार में नहीं है कि वह स्वतंत्र रूप से अपने कार्यात्मक उद्देश्यों को आगे बढ़ायें और अपनी सफलता या विफलता के लिए जिम्मेदार हों। यह अक्सर होता है कि आरबीआई गवर्नर सरकार और राजनीतिक रूप से प्रभावशाली बड़े औद्योगिक उद्यमकर्ताओं के दबाव में काम करते हुए देखे जाते हैं।पिछले 10 वर्षों (2013–2023) में भारत की औसत जीडीपी वृद्धि दर 8.5 प्रतिशत थी। मजदूरों से जुड़े सामान के लिए औसत खुदरा मुद्रास्फीति दर लगभग नौ प्रतिशत थी। यह कहना मुश्किल है कि आरबीआई की ब्याज दर में हेरफेर पिछले कुछ वर्षों में इस तरह की उच्च मुद्रास्फीति प्रवृत्तियों को नियंत्रित करने में कितनी प्रभावी रही है। आरबीआई द्वारा तय की गयी प्राइम लेंडिंगरेट का देश की अर्थव्यवस्था, मुद्रास्फीति दरों और खपत पर बहुत कम प्रभाव पड़ा।

पूर्व पीएम मनमोहन सिंह के निधन पर यूपी में राजकीय शोक

राष्ट्रीय ध्वज आधा झुका रहेगा एवं नही होगा कोई सरकारी मनोरंजन

संवाददाता

लखनऊ। भारत के पूर्व प्रधानमंत्री और भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस के नेता रहे मनमोहन सिंह का 26 दिसंबर को निधन हो गया।92 वर्षीय मनमोहन सिंह 10 वर्षों तक देश के प्रधानमंत्री रहे। मनमोहन सिंह के निधन के बाद उत्तर प्रदेश सरकार ने राजकीय शोक घोषित किया है। इस संबंध में अधिकारियों को आदेश जारी किया है। उत्तर प्रदेश सरकार की ओर से जारी आदेश में कहा गया है कि संयुक्त सचिव गृह मंत्रालय, भारत सरकार के पत्र संख्या–3ध्2ध्2024–पब्लिक, दिनांक 26–12–2024 द्वारा यह निर्देश दिया गया है कि भारत के पूर्व प्रधान मंत्री डॉ. मनमोहन सिंह का 26 दिसंबर 2024 को एम्स अस्पताल, नई दिल्ली में निधन हो गया। दिवंगत गणमान्य व्यक्ति के सम्मान में, यह निर्णय लिया गया है कि 26 दिसंबर 2024 से 01 जनवरी 2025 तक पूरे भारत में सात दिनों का राजकीय शोक मनाया जाएगा, दोनों दिन सम्मिलित हैं।इस अवधि के दौरान पूरे भारत में राष्ट्रीय ध्वज आध ा झुका रहेगा जहां इसे नियमित रूप से फहराया जाता है और राजकीय शोक की अवधि के दौरान कोई आध िकारिक मनोरंजन नहीं होगा।इस अवधि में राष्ट्रीय ध्वज आधा झुका रहेगा एवं कोई सरकारी मनोरंजन नहीं होगा। अपर मुख्य सचिव जितेंद्र कुमार की ओर से जारी हस्ताक्षरित पत्र के जरिए जिलाधिकारियों, मंडलायुक्तों को निर्देश जारी किए गए हैं।त्तर प्रदेश की राज्यपाल आनंदीबेन पटेल, पूर्व मुख्यमंत्री अखिलेश यादव और मायावती ने बृहस्पतिवार को पूर्व प्रधानमंत्री डॉक्टर मनमोहन सिंह के निधन पर शोक जताया। राज्यपाल पटेल ने सिंह के निधन को राजनीति जगत के लिए बड़ी क्षति बताते हुए अपनी संवेदनाएं व्यक्त कीं। अपने बयान में पटेल ने कहा, श्डॉक्टर मनमोहन सिंह का निधन भारतीय राजनीति के लिए बहुत बड़ी क्षति है। मैं उनकी आत्मा की शांति के लिए प्रार्थना करती हूं और शोक संतप्त परिवार के प्रति अपनी हार्दिक संवेदनाएं व्यक्त करती

हूं।समाजवादी पार्टी के अध्यक्ष अखिलेश यादव ने सिंह के निधन पर शोक व्यक्त करते हुए सोशल मीडिया मंच श्एक्स पर लिखा, श्सत्य के प्रतीक और सौम्य व्यक्तित्व वाले डॉ. मनमोहन सिंह का निधन एक अपूरणीय अंतरराष्ट्रीय क्षति है। महान अर्थशास्त्री और पूर्व प्रधानमंत्री को भावभीनी श्रद्धांजलि।बहुजन समाज पार्टी की प्रमुख मायावती ने भी श्एक्स पर कहा, श्पूर्व प्रधानमंत्री डॉक्टर मनमोहन सिंह के निधन की खबर बेहद दुखद है। भारत की आर्थिक प्रगति में उनके उल्लेखनीय योगदान और उनके सदाचारी स्वभाव को हमेशा याद रखा जाएगा। उनके परिवार और प्रशंसकों के प्रति मेरी गहरी संवेदनाएं।प्रदेश कांग्रेस प्रमुख अजय राय ने सोशल मीडिया पर एक मार्मिक पोस्ट के जरिए सिंह को श्रद्धांजलि देते हुए कहा, श्राजनीति में सादगी के प्रतीक डॉक्टर मनमोहन सिंह ने दुनिया को अलविदा कह दिया। आर्थिक सुधार, परमाणु समझौता और मनरेगा समेत उनकी दूरदर्शी पहलों ने भारत को समृद्धि की नयी ऊंचाइयों पर पहुंचाया। राष्ट्र उनके योगदान का हमेशा ऋणी रहेगा।भावभीनी श्रद्धांजलि।भारत के बेहतरीन अर्थशास्त्रियों में से एक और राजनीति में शालीनता के प्रतीक माने जाने वाले सिंह अपने पीछे परिवर्तनकारी नीतियों की विरासत छोड़ गए हैं जिसने आधुनिक भारत को आकार दिया। मनमोहन सिंह का बृहस्पतिवार रात दिल्ली में निधन हो गया।एम्स दिल्ली ने उनके निधन की घोषणा की। गंभीर हालत में रात में आपातकालीन वार्ड में भर्ती कराया गया था।

बुंदेलखंड पृथक राज्य को लेकर यात्रा, राजा बुंदेला की पुलिस से नोकझोंक, कहा– व्यवस्था आपकी जिम्मेदारी

संवाददाता

कानपुर। उरई में बुंदेलखंड पृथक राज्य बनाने को लेकर बुंदेलखंड विकास बोर्ड के उपाध्यक्ष और सिने स्टार राजा बुंदेला जिले में गांव–गांव पांव–पांव यात्रा निकाल रहे हैं। शुक्रवार को जैसे ही यात्रा एट नगर में पहुंची, तो पुलिस प्रशासन से भीड़ अधिक होने व जाम लगने से नोकझोंक हो गई। इसका वीडियो सोशल मीडिया पर वायरल हो गया। वीडियो में राजा बुंदेला पुलिसकर्मियों से कह रहे हैं कि सुरक्षा व्यवस्था की जिम्मेदारी आपकी है उनकी नहीं।

पेड़ पर फंदे से लटका मिला अधेड़ का शव, जेब से मिला रेल का टिकट, नहीं हो सकी शिनाख्त३जांच शुरू

संवाददाता

कानपुर। कन्नौज जिले में जलालाबाद के हरदेवपुर्वा गांव में पेड़ पर अधेड़ का शव फंदे से लटका मिला। ग्रामीणों की सूचना पर पहुंची पुलिस ने जांच पड़ताल की। अधेड़ की शिनाख्त नहीं हो सकी। उसकी जेब में पश्चिम बंगाल से दिल्ली की रेल की टिकट मिली है। कोतवाली गुरसहायगंज की चौकी जसोदा के गांव हरदेवपुर्वा में शुक्रवार की सुबह ग्रामीण खेत पर काम करने जा रहे थे। उसी दौरान ग्रामीणों ने बाग में पेड़ पर फंदे से एक अधेड़ का शव लटका हुआ देखा। ग्रामीण की सूचना पर कोतवाल आलोक दुबे मौके पर पहुंचे। फोरेंसिक टीम व पुलिस ने मौके पर जांच पड़ताल कर नमूने एकत्र किए। अधेड़ के शव को फंदे से उतारा गया। आस पास के गांव के लोगों को बुलाकर शव की शिनाख्त कराने का प्रयास किया गया, लेकिन उसकी शिनाख्त नहीं हो पाई। पुलिस ने शव को पोस्टमार्टम हाउस में रखवा दिया। कोतवाल आलोक दुबे ने बताया कि अधेड़ की उम्र पचास वर्ष से अधिक है। उसकी जेब में पश्चिम बंगाल से दिल्ली तक रेल का टिकट मिला है। अधेड़ की हत्या करने की आशंका लग रही है। पोस्टमार्टम रिपोर्ट में इसका पता चलेगा। इसके आधार पर अग्रिम कार्रवाई की जाएगी।

मुठभेड़ में शातिर चोर गिरफ्तार, पैर में लगी गोली३अस्पताल में भर्ती, अवैध तमंचा समेत अन्य सामान बरामद

संवाददाता

कानपुर। महोबा जिले के करिया पठवा के पास किसी आपराधिक घटना को अंजाम देने की फिराक में खड़े शातिर चोर से पुलिस की मुठभेड़ हो गई। मुठभेड़ में आरोपी के पैर में गोली लगी। उसे इलाज के लिए जिला अस्पताल लाया गया। पुलिस ने आरोपी के कब्जे से अवैध तमंचा, चोरी की बाइक और नकदी बरामद की है। शहर में एक माह से चोरी की घटनाओं में लगातार इजाफा हुआ है। पुलिस अधीक्षक पलाश बंसल के निर्देश पर पुलिस टीमें गठित की गई। बृहस्पतिवार की देर रात कोतवाली प्रभारी अर्जुन सिंह को सूचना मिली कि एक शातिर चोर बिना नंबर प्लेट की बाइक के साथ करिया पठवा के पास खड़ा है। सूचना मिलते ही पुलिस ने घेराबंदी की। पुलिस को देखते ही आरोपी ने फायर कर दिया। जवाब में पुलिस ने भी गोली चलाई। एक गोली आरोपी के पैर में लगी, इससे वह गिर गया। मुठभेड़ में पकड़े गए आरोपी ने अपना नाम राजू अहिरवार निवासी फतेहपुर बजरिया बताया। पुलिस ने आरोपी के कब्जे से एक तमंचा, तीन कारतूस, चोरी की दो घटनाओं के 13 हजार रुपये और चोरी की बाइक बरामद की। अपर एसपी वंदना सिंह ने बताया कि मुठभेड़ में पकड़े गए शातिर अपराधी के खिलाफ गैंगस्टर एक्ट समेत नौ मुकदमे दर्ज हैं। घायल को इलाज के लिए जिला अस्पताल भेजा गया है। अग्रिम कार्रवाई की जा रही है। पुलिस प्रशासन की ओर से ऑपरेशन लंगड़ा के तहत छह माह के अंदर यह चौथी कार्रवाई है।

यूपी में जमीन खरीद सीमा तय

ज्यादा खरीदने पर सरकार के कब्जे में जाएगी जमीन

संवाददाता

लखनऊ। उत्तर प्रदेश सरकार ने प्रॉपर्टी जमीन खरीदने के लिए नया नियम लागू किया है। इस नियम के तहत प्रॉपर्टी खरीदने की एक तय सीमा निर्धारित की गयी है जिससे राज्य में जमीन के अंधाधुंध अधिग्रहण पर रोक लगाई जा सके।यह कदम आम जनता हितो की सुरक्षा और कृषि योग्य भूमि के संरक्षण के उद्देश्य से उठाया गया। उत्तर प्रदेश में किसी भी व्यक्ति को अधिकतम 12.5 एकड़ कृषि भूमि खरीदने की अनुमति यह नियम सुनिश्चित करता है कि राज्य में जमीन का उपयोग को व्यवस्थित रखा जा सके और अधिक भूमि खरीदने की स्थिति में वह जमीन राज्य सरकार की नियंत्रण में चली जाएगी। यह कदम भूमि विवादों और अराजकता को कम करने के लिए आवश्यक माना गया है।सरकार ने स्पष्ट किया है की जमीन खरीदने की नियमों का नाम पालन करने वालों पर कड़ी कार्यवाही है। किसी प्रॉपर्टी खरीदने बेचने की प्रक्रिया में पारदर्शिता आएगी। खतौनी वर्णन दस्तावेजों की जांच अनिवार्य कर दी गया था ताकि भूमि से संबंधित धोखाध ाड़ी को रोका जा सके। खरीदने से पहले जमीन की खतौनी और नक्शे

की जांच करें। जमीन सरकारी न हो, श्रेणी 1 (क) में दर्ज हो। जमीन मालिक से उसकी खतौनी दस्तावेज और 16 अंकों का कोड प्राप्त करें। यदि अंतिम अंक 12 नहीं है तो उसे जमीन को खरीदने से बचे। जमीन कृषि उपयोग या सार्वजनिक उपयोग की श्रेणी में न आती हो, जैसे चकरोड, मरघट या चारागाह। प्रॉपर्टी खरीदने से पहले रजिस्ट्री ऑफिस में 12 साल की रजिस्ट्रेशन रिकॉर्ड की जांच की करे यदि जमीन किसी एससी एसटी समुदाय के व्यक्ति से खरीदी जा रही है तो स्थानीय जिला मजिस्ट्रेट से अनुमति लेने अनिवार्य है ,बिना अनुमति खरीदी गई जमीन राज्य सरकार के कब्जे में जा सकती है।भारत के अलग–अलग राज्यों में जमीन खरीदने की अलग–अलग सीमा निर्धारित है। कर्नाटक और महाराष्ट्र में अब 54 एकड़ तक जमीन खरीद सकते हैं। पश्चिम बंगाल में यह सीमा 24.5 एकड़ है। केरल में केवल 7.5 एकड़ जमीन खरीदने की अनुमति है। बिहार में सीमा 15 एकड़ है जबकि हिमाचल प्रदेश में 32 एकड़ तक है। हर राज्य में भूमि खरीदने के नियम स्थानीय कानूनों, भू–प्रबंधन की आवश्यकताओं पर निर्भर करते हैं।

यूपी में 70 से अधिक आईपीएस अफसरों का होगा प्रमोशन, नए साल पर मिलेगा तोहफा

संवाददाता

लखनऊ। उत्तर प्रदेश सरकार नए साल पर आईपीएस अफसरों को तोहफा देने जा रही है। दरअसल, 70 साल से अधिक आईपीएस अफसरों को प्रमोशन

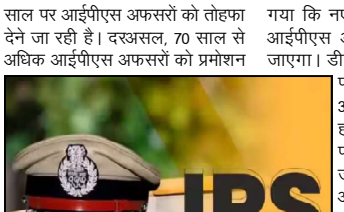

मिलेगा। इसे लेकर मुख्य सचिव मनोज कुमार सिंह की अध्यक्षता में हुई विभागीय पदोन्नति समिति (डीपीसी) की बैठक में कई नामों पर चर्चा हुई। 1992 बैच के आईपीएस एडीजी से डीजी बनेंगे। मुख्य सचिव मनोज कुमार सिंह की अध्यक्षता में हुई बैठक में तय किया गया कि नए साल पर 70 से अधिक आईपीएस अफसरों को प्रमोट किया जाएगा। डीजी सीबीसीआईडी के पद पर तैनात एसएन साबत के 31 दिसंबर को सेवानिवृत्त होने के बाद उन्हें डीजी के पद पर पदोन्नत किया जाएगा। 1992 बैच के आईपीएस एडीजी से डीजी बनेंगे। एडीजी अभियोजन दीपेश जुनेजा डीजी बनेंगे। 8 एडीजी डीजी पद पर प्रमोट हो जाएंगे। यूपी के तीन आईपीएस अफसर आईजी से एडीजी बनेंगे। नोएडा पुलिस कमिश्नर लक्ष्मी सिंह का भी प्रमोशन होगा। लखनऊ आईजी प्रशांत कुमार और एटीएस चीफ नीलाभजा चौधरी एडीजी बनेंगे। 2007 बैच के आईपीएस अफसर आईजी के पद पर प्रमोट होंगे। डीआईजी अमित पाठक, जोगेंद्र कुमार, विनोद कुमार, रविशंकर छवि, भारती सिंह, राकेश प्रताप सिंह, विपिन कुमार मिश्रा, योगेश कुमार सिंह, गीता सिंह, बाबूराम आईजी बनेंगे। आईपीएस शैलेश पांडेय, अभिषेक सिंह, अजय पाल शर्मा, राजेश एस, आलोक प्रियदर्शी, सुधा सिंह, रामबदन सिंह, तेज स्वरूप सिंह, हृदयेश कुमार, सूर्यकांत त्रिपाठी, हेमंत कुटियाल, शालिनी, प्रदीप कुमार, कमला प्रसाद यादव, अरुण श्रीवास्तव, विकास कुमार, राजेश सक्सेना, अरविंद चतुर्वेदी, सुनीता सिंह, दिनेश सिंह, अरविंद कुमार मौर्य, सुभाष चंद्र शाक्य डीआईजी बनेंगे। वहीं, नए वर्ष पर यूपी के 8 डीजी हो सेवानिवृत्त जाएंगे।

पूर्व प्रधानमंत्री मनमोहन सिंह के निधन पर अखिलेश मायावती ने जताया दुख

संवाददाता

लखनऊ। उत्तर प्रदेश के पूर्व मुख्यमंत्री अखिलेश यादव ने पूर्व प्रधानमंत्री मनमोहन सिंह के निधन पर गहरा दुख व्यक्त किया है। अखिलेश यादव ने कहा, डॉ. मनमोहन सिंह ऐसे प्रधानमंत्री थे जिन्होंने देश को आर्थिक रूप से मजबूत किया, आज देश में जो बहुत कुछ दिख रहा है, वो पूर्व प्रधानमंत्री मनमोहन सिंह की वजह से है। उन्होंने आर्थिक नीतियों में जो फैसले लिए, आज उसका नतीजा है कि हम दुनिया में बराबरी पर हैं। वो एक अर्थशास्त्री भी थे, कम बोलते थे लेकिन उस समय उन्होंने जो फैसले लिए, उससे आज पता चलता है कि उन्होंने कितनी सावधानी से वो फैसले लिए... देश के एक अच्छे प्रधानमंत्री के तौर पर उन्हें हमेशा याद किया जाएगा। बहुजन समाज पार्टी की राष्ट्रीय अध्यक्ष मायावती ने के पूर्व प्रधानमंत्री डा. मनमोहन सिंह के निधन पर गहरा दुःख व्यक्त किया है। उन्होंने सोशल मीडिया एक्स पर कहा कि देश के पूर्व प्रधानमंत्री डा. मनमोहन सिंह का आज रात निधन होने की खबर अति–दुखद।

भारत की अर्थव्यवस्था सुधार में उनका खास योगदान रहा। वे नेक इंसान थे। उनके परिवार व सभी चाहने वालों के प्रति मेरी गहरी संवेदना।कांग्रेस सांसद प्रियंका गांधी ने पूर्व प्रधानमंत्री डॉ मनमोहन के निधन दुख व्यक्त किया है। उन्होंने कहा कि पूर्व प्रधानमंत्री डॉ मनमोहन सिंह जी हमारे लिए अभिभावक और मार्गदर्शक थे, जिन पर हमें सदैव गर्व रहेगा। वे देश के करोड़ों लोगों के लिए आदर्श थे। वे सेवा, सादगी और समर्पण की मिसाल थे। आज करोड़ों आंखें नम हैं। भावभीनी श्रद्धांजलि। पूर्व प्रधानमंत्री डॉक्टर मनमोहन सिंह का जन्म 26 सितम्बर 1932 गांव गाह, चकवाल जिला, पंजाब, भारत में हुआ था (आज पंजाब, पाकिस्तान) देश बंटवारे के दौरान पूरा कुछ समय बाद उनका परिवार पाकिस्तान से अमृतसर आकर बस गया था मनमोहन सिंह का 26 दिसंबर 2024 को 92 साल की उम्र में दिल्ली में निधन हुआ ।उनकी माता का नाम अमृत कौर और पिता का नाम गुरुमुख सिंह था। देश के विभाजन के बाद सिंह का परिवार भरत चला आया। यहाँ पंजाब विश्वविद्यालय से उन्होंने स्नातक तथा स्नातकोत्तर स्तर की पढ़ाई पूरी की। बाद में वे कैम्ब्रिज विश्वविद्यालय गये। जहाँ से उन्होंने पीएच. डी. की। तत्पश्चात् उन्होंने आक्सफोर्ड विश्वविद्यालय से डी. फिल. भी किया। उनकी पुस्तक इंडियाज एक्सपोर्ट ट्रेंड्स एंड प्रोस्पेक्ट्स फॉर सेल्फ सस्टेंड ग्रोथ भारत की अन्तर्मुखी व्यापार नीति की पहली और सटीक आलोचना मानी जाती है। डॉ० सिंह ने अर्थशास्त्र के अध्यापक के तौर पर काफी ख्याति अर्जित की।

सेंट मैरीज स्कूल हिलौली में आयोजित की गई खेलकूद प्रतियोगिता

मौरावां संवाददाता–

विकास खंड हिलौली के सेंट मैरीज स्कूल हिलौली में आयोजित बच्चों के विकास के लिए रुग्खेलकूद–प्रतियोगिता (Sports&Day) का आयोजन किया गया जिसमें सभी कक्षाओं के छात्र– छात्राओं ने बढ़चढ़ कर भाग लिया,विद्यालय के रुप्रबंधक–जी व रुप्रधानाचार्या–जी के द्वारा सभी–कक्षा–के रुविजेता– बच्चों–को रुमेडल्स–पहना–कर सम्मानित किया गया। तत्पश्चात विद्यालय के सभी बच्चों को संबोधित करते हुए प्रबंधक रजत सिंह जी ने कहा कि इस तरह की खेलकूद प्रतियोगिता व दौड़ बच्चों के शरीर का विकास करती है व अपने सभी छात्रों के उज्ज्वल भविष्य की कामना करते है। जबकि प्रधानाचार्या ज्योती सिंह जी ने सभी छात्र– छात्राओं को प्रोत्साहित करते हुए बताया कि हमें गर्व है हमारे विद्यालय पर व विद्यालय के होनहार बच्चों पर यह एक दिन हमारे विद्यालय का नाम रोशन करेंगे।

पूर्व पीएम डॉक्टर मनमोहन सिंह का निधन भारतीय राजनीति की अपूरणीय क्षति : योगी

संवाददाता

लखनऊ। कांग्रेस के वरिष्ठ नेता और भारत के पूर्व प्रधानमंत्री डॉ. मनमोहन सिंह अब हमारे बीच नहीं रहे। 92 वर्ष की उम्र में उन्होंने दिल्ली के एम्स अस्पताल में अंतिम सांस ली। गुरुवार देर शाम अचानक तबीयत बिगड़ने के बाद उन्हें दिल्ली एम्स के इमरजेंसी वार्ड में भर्ती कराया गया था, जहां रात

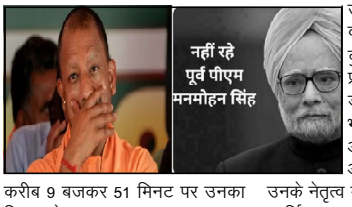

करीब 9 बजकर 51 मिनट पर उनका निधन हो गया। इस दुखद घटना पर पूरे देश में शोक की लहर है। उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने पूर्व प्रधानमंत्री डा मनमोहन सिंह के निधन पर शोक व्यक्त करते हुये कहा है कि यह भारतीय राजनीति की अपूरणीय क्षति है। योगी ने एक्स पर लिखा " पूर्व प्रधानमंत्री एवं प्रख्यात अर्थशास्त्री डॉ. मनमोहन सिंह जी का निधन अत्यंत दुःखद एवं भारतीय राजनीति की अपूरणीय क्षति है। वित्त मंत्री और प्रधानमंत्री के रूप में उन्होंने देश की शासन व्यवस्था में महत्वपूर्ण भूमिका का निर्वहन किया। उन्हें विनम्र श्रद्धांजलि। प्रभु श्री राम से प्रार्थना है कि दिवंगत पुण्यात्मा को सद्गति एवं उनके शोकाकुल परिजनों व समर्थकों को यह अथाह दुःख सहन करने की शक्ति प्रदान करें। ओमः शांति।" डॉ. मनमोहन सिंह भारतीय राजनीति और अर्थव्यवस्था के एक अद्वितीय व्यक्तित्व थे। उनके नेतृत्व में भारत ने कई महत्वपूर्ण आर्थिक सुधार देखे, जिन्होंने देश की प्रगति की दिशा को बदल दिया। उनके निधन से देश ने न केवल एक कुशल राजनेता बल्कि एक दूरदर्शी अर्थशास्त्री को खो दिया है। उनका योगदान भारतीय राजनीति और समाज में सदैव याद किया जाएगा।

आरटीई में चयनित बच्चों की पहली सूची जारी-मिंनरी स्कूलों से दूरी

पात्रों के बजाय अयोग्य उठा रहे है आरटीई योजना का लाभ

संवाददाता

लखनऊ। अलाभित व दुर्बल आय वर्ग के बच्चों हेतु शिक्षा का अधिकार अधिनियम–2009 के अंर्तगत निजी विद्यालयों में प्रवेश के लिये बेसिक शिक्षा विभाग ने पहली लिस्ट जारी कर दी है। पहली सूची में लाटरी द्वारा चयनित सात हजार से अधिक बच्चों का राजधानी के निजी विद्यालयों में प्रवेश दिया जायेगा। परंतु सूची में मिशनरी द्वारा संचालित स्कूलों के नाम नहीं है। तर्क यह दिया जाता है कि मिशनरी स्कूल सेवा के लिये चलते है। इन पर आरटीई एक्ट लागू नहीं होता है। ये स्कूल भी आज की तारीख में भारी–भरकम फीस वसूलते है। सीट न होने का बहाना कर के मोटा डोनेशन लेकर प्रवेश देते है। ऊपर से विदेशी फंडिग अलग से आती है। अब तो कोर्ट ने भी स्पष्ट कर दिया है कि इन स्कूलों के संचालकों को टैक्स के दायरे में रखा जायेगा। जारी पहली सूची में ही कई खामियां है जो पहले से ही चली आ रही है। नगर निगम के जिस वार्ड में लाभार्थी का निवास

हो उसी वार्ड में स्थित किसी विद्यालय में प्रवेश दिया जाता है। परंतु अभिभावक अपनी मर्जी से किसी अच्छे विद्यालय का नाम का चयन कर लेता है। भले ही वह उसके निवास के वार्ड में स्थित न हो। अभिभावक के पास आलीशान घर है, मंहगी गाड़ियां है पर मात्र अस्सी हजार सालाना की आय दिखाकर बेसिक शिक्षा विभाग के कर्मचारियों की सहायता से आरटीई की सूची में स्थान पा लेता है। क्योंकि लाभार्थी बच्चों के घर का, उसकी आय के भौतिक सत्यापन की जिम्मेदारी विभाग पूरी नहीं करता है। आय प्रमाण–पत्र, जन्मतिथि प्रमाण–पत्र सब फर्जी होते है। विभाग किसी प्रकार की कोई जांच नहीं करता है। बस किसी तरह लाटरी निकाल कर अपना कार्य कर देता है। इस तरह की अनेक खामियां है। जिसका फायदा दूसरे लोग उठाते है, वास्तविक और योग्य बच्चे सरकार की इस योजना से वंचित ही रह जाते है।

एक प्रधानमंत्री जो जीता था साधारण जीवन, डॉ. मनमोहन सिंह के बॉडीगार्ड रह चुके योगी के मंत्री असीम अरुण ने ताजा की यादें

संवाददाता

लखनऊ। कांग्रेस के दिग्गज नेता और देश के पूर्व प्रधानमंत्री डॉ. मनमोहन सिंह का 92 वर्ष की उम्र में निधन हो गया है। दिल्ली के एम्स अस्पताल में उन्होंने अंतिम सांस ली। इस दुखद घटना पर पूरे देश में शोक की लहर है। इसी बीच योगी सरकार में मंत्री और पूर्व आईपीएस अधिकारी असीम अरुण ने डॉ मनमोहन सिंह को याद करते हुए उनके साथ बिताए तीन साल के एक किस्से को साझा किया है। असीम अरुण ने अपने सोशल मीडिया अकाउंट एक्स पर पोस्ट करते हुए लिखा, मैं 2004 से लगभग तीन साल उनका बॉडी गार्ड रहा। एसपीजी में पीएम की सुरक्षा का सबसे अंदरुनी घेरा होता है–क्लोज प्रोटेक्शन टीम जिसका नेतृत्व करने का अवसर मुझे मिला था। एआईजी सीपीटी वो व्यक्ति है जो पीएम से कभी भी दूर नहीं रह सकता। यदि एक ही बॉडी गार्ड रह सकता है तो साथ यह बंदा होगा। ऐसे में उनके साथ उनकी परछाई की तरह साथ रहने की जिम्मेदारी थी मेरी। अपने पोस्ट में असीम अरुण डॉ. मनमोहन सिंह की सादगी को दर्शाते हुए आगे लिखते हैं, डॉ साहब की अपनी एक ही कार थी – मारुति 800,

जो पीएम हाउस में चमचमाती काली बीएमडब्ल्यू के पीछे खड़ी रहती थी। मनमोहन सिंह जी बार–बार मुझे कहते– असीम, मुझे इस कार में चलना पसंद नहीं, मेरी गड्डी तो यह है (मारुति)। मैं समझाता कि सर यह गाड़ी आपके ऐश्वर्य के लिए नहीं है, इसके सिक्योरिटी फीचर्स ऐसे हैं जिसके लिए एसपीजी ने इसे लिया है। लेकिन जब कारकेड मारुति के सामने से निकलता तो वे हमेशा मन भर उसे देखते। जैसे संकल्प दोहरा रहे हो कि मैं मिडिल क्लास व्यक्ति हूं और आम आदमी की चिंता करना मेरा काम है। करोड़ों की गाड़ी पीएम की है, मेरी तो यह मारुति है। बता दें कि गुरुवार देर शाम अचानक डॉ. मनमोहन सिंह की तबियत बिगड़ गई थी।

सम्पत्ति का ब्यौरा नही तो प्रमोशन भी नहीं , पीसीएस अफसरों को योगी सरकार की हिदायत

संवाददाता

लखनऊ। योगी सरकार पीसीएस अधिकारियों पर सख्त हो गई है। पीसीएस अधिकारियों के लिए 31 जनवरी 2025 तक संपत्तियों का ब्यौरा देना अनिवार्य कर दिया गया है। इस अवधि तक ऑनलाइन सूचना न देने वालों की पदोन्नतियां रोकी जाएंगी। उत्तर प्रदेश सरकारी सेवक अनुशासन एवं अपील नियमावली के तहत कार्रवाई भी की जाएगी। राज्य कर्मियों के लिए भी 31 जनवरी तक संपत्तियों का ब्योरा न देने पर पदोन्नतियां नहीं दी जाएंगी।प्रमुख सचिव नियुक्ति एवं कार्मिक एम देवराज ने शासनादेश जारी करते हुए सभी विभागाध्यक्षों को निर्देश भेज दिया है। उत्तर प्रदेश सिविल सेवा कार्यकारी शाखा के अधिकारियों की वार्षिक गोपनीय प्रविष्टि के पुराने प्रारूप को निरस्त करते हुए उसके स्थान पर नया जारी किया गया है।नई व्यवस्था में वार्षिक निष्पादन मूल्यांकन रिपोर्ट निर्धारित करते हुए हर साल की 31 जनवरी तक निर्धारित प्रारूप पर वार्षिक संपत्ति विवरण नियुक्ति विभाग को देने की व्यवस्था की गई है। 31 दिसंबर 2024 तक अर्जित चल अचल संपत्ति का विवरण वेबसाइट `चंततवू–चबे.नच. हवअ.पद पर 31 जनवरी तक अनिवार्य रूप से देना होगा। इस अवधि तक संपत्तियों की जानकारी ऑनलाइन न देने पर इसे प्रतिकूल रूप में लिया जाएगा और एक फरवरी के बाद होने वाली डीपीसी में उनके नामों पर विचार नहीं किया जाएगा। जब तक ऑनलाइन संपत्तियों का ब्यौरा नहीं दे दिया जाएगा पदोन्नति के लिए उनके नामों पर विचार नहीं किया जाएगा। राज्य कर्मियों के लिए वर्ष 2024 में अर्जित की गई संपत्तियों का ब्यौरा मानव संपदा पोर्टल पर 31 जनवरी तक देना अनिवार्य किया गया है।

हाथरस हत्याकांड: 'कृतार्थ मुझे मरा मिला था... इसलिए ले गया अस्पताल'; इस वजह से कबूला था जुर्म; बताई पूरी कहानी

संवाददाता

हाथरस। हाथरस के कृतार्थ हत्याकांड में विवेचक ने जिला कारागार में गिरफ्तार प्रबंधक सहित पांचों आरोपियों ने बदले हुए बयान दिए। उन्होंने बताया कि पुलिस की सख्ती से बचने के लिए जुर्म इकबाल का बयान दिया था। हाथरस के कृतार्थ हत्याकांड में विवेचक ने जिला कारागार अलीगढ़ में जाकर अभियुक्तों के दोबारा से बयान दर्ज किए। अपने बयान में स्कूल के प्रबंधक दिनेश बघेल ने बताया कि पूर्व विवेचक को उन्होंने गलत बयान दिया था, क्योंकि उस समय वह काफी भयभीत थे और उन्हें यह भी भय था कि पुलिस उनके साथ मारपीट न करे। प्रबंधक ने अपने बयान में कहा कि उनसे कहा गया था कि पुलिस की सख्ती से बचने के लिए घटना का इकबाल कर लो तो पुलिस तुमसे कड़ाई से पूछताछ नहीं कर पाएगी और जेल भेज देगी। हम पांच लोगों ने आपस में बातचीत करके घटना को स्वीकार कर लिया था। जिला कारागार में प्रबंधक दिनेश बघेल ने फिर से दिए गए बयानों में विवेचक से कहा कि मैं आपको सही बात बता रहा हूं कि मैं स्कूल के आवासीय हॉस्टल में पहुंचा था तो मुझे कृतार्थ मरा हुआ मिला था। मैंने उसकी धड़कनें चेक कीं और नब्ज देखी तो न तो धड़कनें चल रही थीं और न उसकी नब्ज चल रही थी। शरीर ठंडा हो चुका था। अब मेरे मन में बात आई कि मैं अपने बचाव के लिए इसे अस्पताल ले जाऊं तो यह कार्य मेरे हित में रहेगा और हमारा बचाव भी हो जाएगा। मैंने पुलिस और अन्य अधिकारियों को सूचना नहीं दी थी, क्योंकि बच्चे की मृत्यु स्कूल के हॉस्टल के कमरे में हुई थी और मैं स्कूल का डायरेक्टर था। दूसरा हमने आवासीय विद्यालय के संचालन की वैध रूप से अनुमति नहीं ली थी और न ही शिक्षा विभाग को सूचित किया था। प्रबंधक दिनेश बघेल ने अपने बयान में कहा कि मैंने स्कूल के अन्य लोगों के साथ अपने पिता जसोदन सिंह, प्रधानाचार्य लक्ष्मण सिंह, अध्यापक रामप्रकाश सोलंकी और वीरपाल के साथ मिलकर बचाव के उपाय सोचे। यह भी सोचा कि कृतार्थ के परिवार वालों को यह बताएंगे कि उसकी मौत

बुखार से हो गई है। वह परिजनों को यह दर्शाना चाहते थे कि उन्होंने कृतार्थ का इलाज कराने के प्रयास किए हैं, ताकि संतुष्ट होने पर परिजन बच्चे के शव का अंतिम संस्कार कर देंगे और वह लोग बच जाएंगे। आपको बता दें कि उत्तर प्रदेश के हाथरस जिले के डीएल पब्लिक स्कूल के कक्षा दो के छात्र कृतार्थ की हत्या कहानी को तीन माह बाद पुलिस ने बदल दिया है। आरोप पत्र में तंत्र–मंत्र में हत्या किए जाने के पुलिस पूर्व में किए गए दावे को पूरी तरह से नकार दिया है और कक्षा आठवीं के छात्र को हत्या करने का आरोपी बनाया है। पुलिस उसे 16 दिसंबर को गिरफ्तार कर मथुरा बाल सुधार गृह भेज चुकी है। पुलिस का कहना है कि स्कूल में छुट्टी कराने के लिए उसने कृतार्थ की हत्या की थी। पुलिस ने दो दिन पहले 23 दिसंबर को मुख्य न्यायिक मजिस्ट्रेट संजीव कुमार त्रिपाठी के न्यायालय आरोप पत्र दाखिल किया। इसमें पूर्व में गिरफ्तार किए गए स्कूल के प्रबंधक दिनेश बघेल समेत पांच आरोपियों से हत्या और आपराधिक साजिश रचने की धारा हटा दी है। साक्ष्य मिटाने और पुलिस को जानकारी नहीं देने का आरोपी उन्हें बनाया है। धारा कम होने के बाद उन्हें कोर्ट से जमानत भी मिल गई है। गत 23 सितंबर को सुबह कृतार्थ का शव डीएल पब्लिक स्कूल के प्रबंधक दिनेश बघेल की कार में सादाबाद में मिला था। वह विद्यालय परिसर में बने छात्रावास में रहकर पढ़ाई करता था। इस मामले में पुलिस ने 26 सितंबर को प्रबंधक दिनेश बघेल, राम प्रकाश सोलंकी, लक्ष्मण सिंह , वीरपाल सिंह, जसोदन सिंह को गिरफ्तार कर जेल भेजा था।

आगरा के सबसे बड़े दवा बाजार में औषधि विभाग का छापा, मचा हड़कंप... सैंपल लिए गए

संवाददाता

आगरा। चक्कर आने, कान में आवाज की समस्या में इस्तेमाल की जाने वाली दवा वर्टिन के नकली टैबलेट बिक रहे हैं। इस शिकायत पर बृहस्पतिवार को औषधि विभाग की टीम ने फव्वारा बाजार में छापा मारा। खरीद–बिक्री के बिल मांगे गए हैं। एबाट दवा कंपनी की ओर से शिकायत दर्ज कराई गई थी कि फव्वारा बाजार में कई दुकानों पर नकली वर्टिन टैबलेट बेची जा रही है। शुक्रवार को भी कई मेडिकल स्टोरों की जांच हुई थी। सहायक औषधि आयुक्त अतुल उपाध्याय ने बताया कि बृहस्पतिवार को फव्वारा स्थित बंसल मेडिकल स्टोर सहित तीन थोक दवा दुकानों पर जांच की गई। डायमंड मार्केट रामबाग स्थित जय बजरंग मेडिकल स्टोर, गुप्ता मेडिकल स्टोर, रामबाग चौराहा, दयालबाग स्थित बीएस मेडिकल स्टोर और गांधी मेडिकल स्टोर महेंद्र मार्केट दिल्ली गेट पर बीते सप्ताह छापा मारा गया था। दवाओं के नमूने लिए थे। वहीं जिला आगरा केमिस्ट एसोसिएशन के अध्यक्ष आशु शर्मा का कहना है कि जगनेर में सैंपल और नकली दवाएं मिलने के बाद भी औषधि विभाग ने छापेमारी नहीं की। वर्टिन टैबलेट के नाम पर वसूली का खेल शुरू कर दिया है।

बाग में पड़ा मिला युवक का शव, ई-रिक्शा लूट कर हत्या की आशंका

संवाददाता

अलीगढ़। अलीगढ़ में लोधा थाना क्षेत्र के जिरौली चिकावटी गांव के पास बेर के बाग में युवक का शव पड़ा मिला। ई–रिक्शा लूट कर युवक की हत्या करने की आशंका जताई जा रही है। प्राप्त जानकारी के अनुसार आज सुबह युवक का शव बेर के बाग में मिलने से सनसनी फैल गई। ग्रामीणों का कहना है कि शव लगभग 12 घंटे से पड़ा हुआ था। पुलिस ने मौके पर पहुंच कर शव को कब्जे में लिया और जांच शुरू कर दी है। बताया जा रहा है कि मृतक ई–रिक्शा चालक लोधा के गांव दुनाई का रहने वाला है। उसके ई–रिक्शा को लूट कर उसकी हत्या कर शव को बाग में फेंका गया होगा।

ड्यूटी जा रहे युवक को अज्ञात वाहन ने रौंदा, मौत, परिवार में छाया मातम

संवाददाता, अलीगढ़। ड्यूटी करने जा रहे बाइक सवार को 26 दिसंबर की सुबह एक अज्ञात कार ने टक्कर मार दी। हादसे में युवक की मौत हो गई। जिससे परिवार में मातम छा गया। गौमत निवासी सत्येंद्र (30) पुत्र हेम सिंह परिहार रोज की तरह बाइक ड्यूटी के लिए निकले थे। रास्ते में गांव बीकानेर पर पीछे से टक्कर मार दी। हादसे के बाद कार चालक मौके से फरार हो गया। मौके पर आसपास के लोगों को भीड़ एकत्रित हो गई। जानकारी होने पर पुलिस व परिजन पहुंच गए। युवक ने मौके पर ही दम तोड़ दिया। पुलिस को शव को पोस्टमार्टम के लिए भेज दिया है। सत्येंद्र चार बहन और दो भाई में सबसे छोटा था। उस पर 5 वर्ष की बेटी है।

ट्रक ने बाइक सवार दंपती में मारी टक्कर, हालत गंभीर

संवाददाता, अलीगढ़। खेरेश्वर चौराहे पर 26 दिसंबर की रात एक तेज रफ्तार ट्रक ने बाइक सवार दंपती को टक्कर मार दी। ट्रक बाइक को करीब दस मीटर चक घसीटता हुआ ले गया। हादसे में महिला के हाथ में गंभीर चोट लगी है। गांव ताजपुर–रसूलपुर निवासी खेमसिंह अपनी पत्नी जयश्री देवी के साथ बाइक पर शहर से घर का सामान खरीदकर घर लौट रहे थे। रास्ते में खेरेश्वर चौराहे पर एटा की तरफ से आ रहे तेज रफ्तार ट्रक ने बाइक को टक्कर मार दी।

एएमयू आए थे मनमोहन सिंह, छात्रों को शिक्षकों की तरह किया था संबोधित

संवाददाता

अलीगढ़। पूर्व प्रधानमंत्री डॉ. मनमोहन सिंह का बृहस्पतिवार देर रात देहावसान हो गया। 27 मार्च 2003 को यूनिवर्सिटी के दीक्षांत समारोह में डॉ. सिंह को बतौर मुख्य अतिथि आमंत्रित किया गया था। उस समय वह राज्यसभा में प्रतिपक्ष के नेता थे। दीक्षांत समारोह में उन्होंने एक शिक्षक की तरह विद्यार्थियों को संबोधित किया था। उनके साथ बिताए लम्हों को कर अलीगढ़ मुस्लिम यूनिवर्सिटी (एएमयू) के सेवानिवृत्त प्रो. आरपी सिंह व्यथित हो गए। प्रो. सिंह का डॉ. सिंह से आत्मिक रिश्ता था। वर्ष 2003 में जब डॉ. मनमोहन सिंह यूनिवर्सिटी आए थे, तब उनका जोरदार स्वागत किया गया था। उन्होंने देश की अर्थव्यवस्था को लेकर भी खूब बातें की थीं। एएमयू के पूर्व पूर्व जनसंपर्क अधिकारी डॉ. राहत अबरार ने बताया कि डॉ. सिंह अपने भाषण के दौरान देश की अर्थव्यवस्था का जिक्र करते रहे। वह यूनिवर्सिटी के माहौल को देखकर काफी खुश हुए

थे। भाषण देने के बाद वह दिल्ली चले गए। यूनिवर्सिटी परंपरा के अनुसार मुख्य अतिथि की तस्वीरें और शेरवानी भेंट की जाती हैं। इस बारे में प्रो. आरपी सिंह ने बताया कि यह चीजें लेकर वह दिल्ली गए थे। उन्होंने डॉ. सिंह को फोन किया कि वह आ रहे हैं। जब उनकी कार उनके आवास पर पहुंची, तो वह कार पार्किंग में खड़े उनका इंतजार कर रहे थे। कार वहां रुकी, जैसे ही डॉ. सिंह ने दरवाजा खोलना चाहा उन्होंने विनम्रता से मना कर दिया। बहरहाल, वह कमरे में उन्हें ले गए। डॉ. सिंह को उनकी अमानत भेंट की। यूनिवर्सिटी सहित देश–दुनिया को लेकर बातचीत हुई। इस दौरान दोनों ने एक बार शर्बत फिर चाय पी । प्रो. आरपी सिंह ने कहा कि उनका जाना अपूरणीयक्षति है।

हादसे की अफवाह पर कंटेनर चालक को भीड़ ने पीटा, पुलिस ने बचाकर कराया अस्पताल में भर्ती

संवाददाता

अलीगढ़। अलीगढ़ में क्वार्सी क्षेत्र के रामघाट रोड स्थित किशनपुर

तिराहे पर 26 दिसंबर को स्कार्पियो को टक्कर मारकर आए कंटेनर को लेकर किसी ने अफवाह उड़ा दी कि पीछे कई लोगों को रौंदकर आया है। इस पर भीड़ ने चालक को घेरकर जमकर पिटाई कर दी। इससे चालक बेहोश हो गया। पुलिस ने उसे बचाया और अस्पताल में भर्ती कराया। 26 दिसंबर की रात नौ बजे एक कंटेनर नो एंट्री में मीनाक्षी पुल से रामघाट रोड पर क्वार्सी की ओर आ रहा था। जैसे ही वह मीनाक्षी पुल से नीचे उतरा तो महाजन होटल के पास रास्ता संकरा होने के कारण कंटेनर स्कार्पियो से टकरा गया। इससे स्कार्पियो कुछ क्षतिग्रस्त हो गई। स्कार्पियो चालक ने शोर मचाया। मगर, कंटेनर चालक ने नहीं रोका। इसी बीच राहगीरों ने शोर मचा दिया कि यह कंटेनर पीछे कई लोगों को रौंदकर आया है। इस पर भीड़ ने कंटेनर के जाम में फंसते ही उसे घेर लिया। भीड़ ने चालक को खींचकर पीटना शुरू कर दिया। इससे मारपीट में चालक बेहोश हो गया। चौराहा पर मौजूद यातायात पुलिसकर्मी कुछ माजरा समझ पाते। तब तक वहां हंगामा होने लगा और जाम लग गया। यातायात कर्मियों ने क्वार्सी पुलिस को सूचना देकर बुलाया। किसी तरह पुलिस ने भीड़ से कंटेनर चालक को बचाकर पंडित दीनदयाल संयुक्त चिकित्सालय में भर्ती कराया गया है। क्वार्सी पुलिस के अनुसार कंटेनर नो एंट्री में कैसे आया इसकी जांच की जा रही है। अभी स्कार्पियो चालक की ओर से कोई तहरीर नहीं मिली है।

एएमयू वैज्ञानिक समेत 101 डॉक्टर बनाएंगे कार्सिनोमा कैंसर इलाज की गाइडलाइन, ये है प्लानिंग

संवाददाता

अलीगढ़। न्यूक्लियर प्रोटीन ऑफ द टेस्टिस (एनयूटी) कार्सिनोमा एक दुर्लभ कैंसर है। यह बीमारी 10 लाख लोगों में से किसी एक को होती है। नट कार्सिनोमा कैंसर के उपचार के तरीकों का निर्धारण करने के लिए दुनियाभर के विश्व विशेषज्ञ मंथन कर रहे हैं। पिछले दिनों इलाज की गाइडलाइन तैयार करने के लिए 101 देशों के वैज्ञानिक और डॉक्टरों की एक टीम बनी है। इस टीम में भारत की तरफ से एएमयू के वैज्ञानिक डॉ. हिफ्जुर आर. सिद्दीकी को शामिल किया गया है। एएमयू के जंतु विभाग के प्राध्यापक डॉ. हिफ्जुर आर. सिद्दीक कई वर्षों से कैंसर पर शोध कर रहे हैं। इनके कई शोध पत्र इंटरनेशनल जर्नल में प्रकाशित हो चुके हैं। वह अमेरिका, ब्रिटेन, चीन, इटली, स्वीडन, पुर्तगाल, स्पेन, ग्रीस, ऑस्ट्रिया, सिंगापुर, मिस्र, रूस सहित विभिन्न देशों के 101 वैज्ञानिकों के साथ नट कार्सिनोमा पर काम करेंगे। डॉ. सिद्दीकी ने कहा कि नट कार्सिनोमा की जानकारी पहली बार 1991 में हुई थी। उन्होंने कहा कि न्यूक्लियर प्रोटीन ऑफ द टेस्टिस (एनयूटी) कार्सिनोमा एक दुर्लभ और घातक बीमारी है। चिकित्सक और वैज्ञानिक मिलकर इलाज करते हैं। इस शरीर के हिस्से में होती बीमारीडॉ. सिद्दीकी ने कहा कि कार्सिनोमा आमतौर पर सिर, गर्दन और सीने के बीच में होता है, जिसे मिडलाइन कार्सिनोमा कहा जाता था। बाद में यह पता चला कि यह कैंसर फेफड़े, हड्डियों, नाक, ग्रंथियों, केंद्रीय तंत्रिका तंत्र और ऊतकों सहित विभिन्न अंगों में भी होता है। उन्होंने कहा कि

इसके उपचार के लिए कोई गाइडलाइन नहीं थी। अब इस कमी को दूर करने के लिए वैज्ञानिक टीम ने कार्सिनोमा के उपचार के लिए यह यह समिति बनाई। टीम में मेडिकल ऑन्कोलॉजिस्ट, रेडिएशन ऑन्कोलॉजिस्ट, सर्जिकल ऑन्कोलॉजिस्ट, पैथोलॉजिस्ट, नर्स, आणविक जीवविज्ञानी, सांख्यिकीविद् और जैव सूचना विज्ञान विशेषज्ञ शामिल हैं। कैंसर के क्षेत्र में काम करने पर डॉ. सिद्दीकी को अंतरराष्ट्रीय व राष्ट्रीय स्तर पर 42 पुरस्कार मिल चुके हैं। इनमें 2010 में सोसाइटी ऑफ बेसिक यूरोलॉजिक रिसर्च यूएसए से यंग साइंटिस्ट अवार्ड, 2017 में इंडियन एकेडमी ऑफ बायो–मेडिकल साइंसेज से फरहा देबा अवार्ड, 2019 में सोसाइटी ऑफ फार्मास्युटिकल एजुकेशन एंड रिसर्च से बैंकॉक में इनोवेटिव रिसर्चर ऑफ द ईयर और एएमयू के जूलॉजी विभाग से बेस्ट टीचर अवार्ड–2018 शामिल हैं। उन्हें प्रतिष्ठित सर सैयद इनोवेशन अवार्ड–आउटस्टेडिंग रिसर्चर ऑफ द ईयर 2022 से भी सम्मानित किया गया।

टेंपो को टक्कर मारता हुआ दीवार से टकराया ट्रक

चालक की मौत, छह सवारी घायल

संवाददाता

अलीगढ़। अलीगढ़–पलवल मार्ग स्थित गांव अंडला के पास 26 दिसंबर की शाम को हादसा हो गया। एक ट्रक ने सवारियों से लदे टेंपों में टक्कर मार दी। हादसे में ट्रक चाल की मौत हो

गई। टेंपों में सवार करीब छह सवारियां घायल हो गईं। 26 दिसंबर की शाम करीब चार बजे गांव अंडला के लवकुश इंटर कॉलेज के पास अलीगढ़ की ओर से आ रहे ट्रक अचानक अनियंत्रित हो गया। ट्रक टेंपो को टक्कर मारता हुआ कॉलेज की दीवार में जा घुसा। ट्रक की केबिन में चालक चाल फंस गया। हादसे के बाद मौके भीड़ एकत्रित हो गई। लोग राहत कार्य में जुट गए। जानकारी होने पर पुलिस मौके पहुंच गई। केबिन में फंसे संदीप कुमार उर्फ भूरा (26) निवासी मजूपुर को निकाला। गंभीर हालत में उसे अलीगढ़ इलाज के लिए रेफर किया, जहां देर शाम उसकी मौत हो गई। संदीप चार भाइयों में तीसरे नंबर का था। चिकित्सकों ने उसे मृत घोषित कर दिया। इधर, टेंपो में सवार चालक सहित छह सवारियां घायल हो गईं। जिन्हें पुलिस ने एंबुलेंस से सीएचसी खैर भेजा गया। टेंपो में पराग सक्सेना निवासी अलीगढ़, भीम सिंह निवासी मदन गढ़ी गोड़ा गंभीर रूप से घायल हो गए। उन्हें अलीगढ़ के लिए रेफर किया है। अल्पना पत्नी सतवीर निवासी बृजा नगला, रजनी देवी पत्नी प्रमोद निवासी अहमदपुर जेवर, मोहित निवासी अहमदपुर जेवर, आसिफ निवासी सहजपुर व वृंदा भी घायल हुए हैं।

मंदिर के पास गोशाला की जमीन में मटके में मिला ये सामान... साधु और ट्रैक्टर चालक के उड़े होश, ग्रामीण हैरान

संवाददाता

आगरा। आगरा के पिनाहट इलाके के बसई अरेला में पुराने गांव में प्राचीन चामुंडा मंदिर के पास खाली पड़ी जमीन पर गोशाला निर्माण के लिए ट्रैक्टर से मिट्टी के समतलीकरण में सोने और चांदी के सिक्के मिले। मटके में सिक्के भरे थे, जो ट्रैक्टर चलने के कारण फूट गया। कुछ सिक्कों को ग्रामीण अपने साथ ले गए। यह सिक्के ब्रिटिश हुकूमत के दौरान वर्ष 1940 और 1942 के हैं। प्राचीन चामुंडा मंदिर के पास गोशाला की जमीन को समतल करने के दौरान सोने–चांदी के सिक्कों से भरा मटका पाया गया। ट्रैक्टर चालक और ठेकेदार सेवाराम के साथ मंदिर के सेवक गरीबदास ने इन सिक्कों को बटोर लिया। मटके में सिक्के मिलने की बात जब गांव में पहुंची तो अन्य ग्रामीण भी पहुंचे और सोने–चांदी के सिक्के लेने की होड़ लग गई। जिसे जितने सिक्के मिले, उठा लिए। प्रशासन को कुछ लोगों ने शिकायत की तो मंदिर के सेवक गरीबदास से चांदी के तीन सिक्के बरामद किए गए। इन पर किंग जॉर्ज की छवि अंकित है। ग्रामीणों के मुताबिक साधु, ट्रैक्टर चालक और ठेकेदार सेवाराम के पास कई सिक्के हैं। उधर, आगरा के ट्रांस यमुना थाना क्षेत्र में ऑटो के इंतजार में खड़ी महिला और उनकी भतीजी को टप्पेबाजों ने ठग लिया। सड़क पर मिले सोने की

मुहरों को बांटने का लालच देकर उनके गहने उतरवा ले गए। दोनों ने रुमाल खोलकर देखा तो पत्थर निकले। पुलिस ने घटना के 22 दिन बाद केस दर्ज किया है। खंदौली थाना क्षेत्र के गांव शेरखां निवासी आस्था चौहान ने केस दर्ज कराया है। बताया कि 4 दिसंबर को वह अपनी मौसी मंजू के साथ उन्हें आंवलखेड़ा ले जा रही थीं। दोपहर करीब 12 बजे टेढ़ी बगिया चौराहे पर ऑटो का इंतजार कर रही थीं। इस दौरान एक युवक आया। वह बात करने लगा। अचानक किसी ने रुमाल की बंधी पोटली गिरा दी। एक युवक ने उठाकर देखा तो बात कर रहे युवक ने पूछा कि क्या है। उसने सोने की मुहरें दिखाईं। हमसे मुखातिब होते हुए कहा कि हम सब बांट लेंगे। बहाने से ऑटो में बैठाकर ले गए। रास्ते में बोले कि ऐसे हिस्सा नहीं हो पाएगा। उनके और उनकी मौसी के गहने उतरवा लिए। बाद में बोले मुहरें बहुत अधिक कीमत की हैं, तुम ये रख लो हमें गहने दे दो। वह तैयार हो गईं। बाद में रुमाल खोलकर देखा तो अंदर पथर के टुकड़े निकले।

युवक-युवती ने जान देने के इरादे से खाया जहर, मेडिकल में भर्ती, हालत बेहद नाजुक

संवाददाता

अलीगढ़। 26 दिसंबर की शाम को रोरावर क्षेत्र के गांव सलेमपुर माफी के जंगल में एक युवक और युवती ने जहर खा लिया। दोनों अचेत अवस्था में रेलवे लाइन किनारे मिले। युवक ने जहर खाने से पहले अपने दोस्त को फोन करके सूचना दे दी थी लिहाजा उसका दोस्त पुलिस को साथ लेकर मौके पर पहुंचा और अस्पताल में भर्ती कराया। दोनों की हालत नाजुक बताई जा रही है। एएसपी का कहना है कि दोनों के बीच प्रेम प्रसंग चल रहा है। युवती की शादी छह माह पूर्व हुई थी और वह आज मिलने के लिए आई थी। फिर दोनों ने ही जहर खा लिया। एएसपी मयंक पाठक के अनुसार मूल रूप से इगलास के गांव विदिरिका निवासी दिलखुश (28) पुत्र सुरेश चंद्र घंटर चौक इलाके के एक कोल्ड स्टोर पर पिछले पांच–छह साल से मजदूरी कर रहा है। यहां पड़ोस के गांव की एक महिला भी मजदूरी करने आती है। महिला के साथ उसकी बेटी भी यहां आती थी। इसी बीच दिलखुश के उस युवती से प्रेम संबंध हो गए। दोनों चोरी–छिपे मिलने लगे। दोनों के प्रेम संबंधों की भनक जब घर वालों को लगी तो विरोध शुरू हो गया। युवती के परिजनों ने उस पर बंदिशें लगाने के साथ ही करीब छह माह पूर्व खैर क्षेत्र के एक युवक से शादी

कर दी। शादी के बाद युवती अपनी ससुराल चली गई। इधर, अब 26 दिसंबर दोपहर युवती अपनी ससुराल से खेरेश्वर चौराहे पर पहुंची। जहां से उसने दिलखुश को फोन कर मिलने बुलाया। प्रत्यक्षदर्शियों के अनुसार दोनों यहां से पैदल ही टहलते हुए रोरावर क्षेत्र में फ्रेट कॉरिडोर के रेलवे ट्रैक के सहारे पहुंच गए। जहां दोनों में क्या बात हुई, ये तो अभी तक स्पष्ट नहीं हो सका है। मगर, दोनों ने जहर खा लिया। दिलखुश ने फोन करके अपने एक दोस्त को सूचना देकर जगह बता दी। इस सूचना पर युवक के परिजन खोजते हुए रोरावर थाना पुलिस के साथ सलेमपुर माफी के जंगल में पहुंच गए। जहां दोनों रेलवे ट्रैक के किनारे एक बाजरा के खेत में अचेत अवस्था में मिल गए। दोनों के मुंह से झाग निकल रहे थे। इन्हें निजी अस्पताल ले जाया गया। जहां से हालत गंभीर बताते हुए रेफर कर दिया गया। परिजन उन्हें क्वार्सी स्थित ट्रामा सेंटर लेकर पहुंचे। नाजुक हालत होने पर जेएन मेडिकल कॉलेज ले जाया गया। एएसपी मयंक पाठक ने बताया कि मामले में युवती के परिजनों व ससुरालियों को बुलाया गया है। बातचीत के बाद आगे की कार्रवाई पर कोई निर्णय लिया जाएगा। चिकित्सकों के अनुसार प्रेमी युगल की हालत अभी नाजुक बनी हुई है। होश में आने पर ही साफ हो सकेगा कि उन्होंने जान देने की कोशिश क्यों की है।

वक्फ बोर्ड ने शनिदेव मंदिर से छोड़ा दावा, ढाई साल पहले उठे विवाद से इसलिए पीछे खींचे कदम

संवाददाता

एटा। प्रदेश और देश में जलेसर की छोटे मियां–बड़े मियां की जात मशहूर है। यहां शनि देव मंदिर (पूर्व में दरगाह)

से वक्फ बोर्ड ने अपना दावा वापस ले लिया है। करीब ढाई साल पहले इस संपत्ति को लेकर विवाद हुआ था। दरगाह कमेटी के अध्यक्ष सहित 9 लोगों पर रिपोर्ट दर्ज हुई थी और कमेटी को भंग कर दिया गया था। इसके बाद से यहां प्रशासक की तैनाती चल रही है। जलेसर देहात में छोटे मियां और बड़े मियां दरगाह के नाम से स्थित परिसर की धार्मिक मान्यता प्रदेश के साथ ही अन्य राज्यों में भी है। बुधवार और शनिवार को होने वाली जात करने के लिए दूर–दूर से यहां लोग आते हैं। दशकों से यहां दरगाह कमेटी बनी हुई थी जो चढ़ावे की मालिक होती थी। 2022 में चढ़ावे में गबन का मामला पाए जाने पर कमेटी को भंग कर दिया गया। इस बीच आवाजें उठीं कि दरगाह मंदिर पर कब्जा करके बनवा ली गई थी। इस संबंध में परिसर की खुदाई कराई गई तो यहां हनुमान जी और शनिदेव की प्रतिमाएं मिट्टी में दबी हुई निकलीं। इन्हें स्थापित कर पूजा–अर्चना शुरू कर दी गई थी। पिछले दिनों वक्फ संपत्तियों का सर्वे कराया गया था। इसके बाद वक्फ बोर्ड ने जो सूची जारी की है, उसमें जलेसर की इस दरगाह का नाम नहीं है।

वेलवेट आउटफिट को स्टाइल करते समय ना करें ये गलतियां

एजेंसी

वेलवेट काफी क्लासी लुक देता है, लेकिन सिर से लेकर पैर तक वेलवेट से खुद को ओवरलोड कर देना आपके लुक को बिगाड़ सकता है। वेलवेट ब्लेजर, ड्रेस या पैंट बहुत खूबसूरत लगते हैं, लेकिन इन सबको एक साथ पहनना सही नहीं माना जाता।ठंड के मौसम में हम सभी की स्टाइलिंग का तरीका काफी बदल जाता है। वेलवेट सर्दियों में सबसे ज़्यादा पसंद किया जाने वाला कपड़ा है। यह ना केवल बेहद ही सॉफ्ट और कंफर्टेबल है, बल्कि इससे आपको एक रॉयल लुक भी मिलता है। हालांकि, कई बार यह देखने में आता है कि हम सभी वेलवेट को स्टाइल करते समय कुछ छोटी–छोटी गलतियां कर बैठते हैं, जिससे आपका ओवर ऑल लुक बिगड़ जाता है। मसलन, अगर आप अपर वियर और बॉटम वियर, दोनों में ही वेलवेट को चुनते हैं तो इससे शायद आपका लुक अजीब लगे। वेलवेट को वास्तव में बैलेंस करके पहनना बेहद जरूरी है। आप इसे कैजुअल से लेकर पार्टी तक का हिस्सा बना सकती हैं, बस वेलवेट से जुड़ी स्टाइलिंग मिसटेक्स से बचना चाहिए। तो चलिए आज इस लेख में हम आपको कुछ ऐसी ही गलतियों के बारे में बता रहे हैं जिसे अक्सर लोग वेलवेट स्टाइल करते हुए कर बैठते हैं– वेलवेट काफी क्लासी लुक देता है, लेकिन सिर से लेकर पैर तक वेलवेट से खुद को ओवरलोड कर देना आपके लुक को बिगाड़ सकता है। वेलवेट ब्लेज़र, ड्रेस या पैंट बहुत खूबसूरत लगते हैं, लेकिन इन सबको एक साथ पहनना सही नहीं माना जाता। कोशिश करें कि आप अपने स्टेटमेंट आइटम के रूप में एक वेलवेट पीस चुनें। उदाहरण के लिए, अगर आप वेलवेट पैंट पहन रहे हैं, तो टेक्सचर को बैलेंस करने के लिए इसे सिल्क ब्लाउज या सिंपल कश्मीरी स्वेटर के साथ पहनें।वेलवेट को स्टाइल करते समय आपको उसके कलर्स पर भी ध्यान देना चाहिए। वेलवेट फैब्रिक में रिच व डीप शेड्स काफी अच्छे लगते हैं, लेकिन अगर आप नियॉन या बहुत ज़्यादा चमकीले शेड्स चुनते हैं तो इससे आपका लुक खराब हो सकता है। इसी तरह, अगर आप डल टोन चुनती हैं तो इससे भी आपका लुक अच्छा नहीं आता है। वेलवट में आप एमरल्ड ग्रीन, बरगंडी, नेवी या क्लासिक ब्लैक जैसे गहरे, ज्वेल टोन पहनने की कोशिश करें। वेलवेट को आप कैजुअल्स से लेकर पार्टी वियर किसी भी ओकेजन पर स्टाइल कर सकती हैं, बस आपका तरीका सही होना चाहिए। उदाहरण के लिए, कैजुअल कॉफी मीटअप के लिए वेलवेट इवनिंग गाउन आपके लुक को ओवर दिखाएगा। कैजुअल आउटिंग के लिए आप हाई–वेस्ट जींस के साथ वेलवेट कैमिसोल पहनें। इसी तरह, फॉर्मल इवेंट के लिए वेलवेट ड्रेस और हील्स को स्टाइल किया जा सकता है।

2020–23 के बीच जन्मे बच्चों की सेहत को लेकर आई चौंकाने वाली जानकारी, वैज्ञानिकों की टीम ने किया सावधान

एजेंसी

साल 2019 के आखिर के महीनों में शुरू हुई कोरोना महामारी ने 2020 तक दुनिया के अधिकतर हिस्सों को अपनी चपेट में ले लिया था। साल 2021–22 के दौरान कोरोना की लहरों ने बड़ी संख्या में लोगों को संक्रमण का शिकार बनाया। कोरोना संक्रमण के कारण होने वाले दीर्घकालिक दुष्प्रभावों को लेकर लंबे समय से चर्चा होती रही है। इसी से संबंधित एक हालिया अध्ययन में स्वास्थ्य विशेषज्ञों ने चौंकाने वाली जानकारी साझा की है। एक रिपोर्ट में बताया गया है कि कोरोना महामारी के दौरान संक्रमित मां से जन्मे बच्चों में ऑटिज्म विकार होने का खतरा अधिक देखा जा रहा है। ऐसे में अगर आपके घर में भी 2020–23 के दौरान किसी बच्चे का जन्म (संक्रमित मां से) हुआ हो तो सावधान हो जाइए। डेनमार्क के कोपेनहेगन में प्रस्तुत की गई इस अध्ययन की रिपोर्ट से पता चलता है कि गर्भावस्था के दौरान कोविड–19 से पीड़ित माताओं से पैदा हुए बच्चों में ऑटिज्म और विकास संबंधी देरी का जोखिम बढ़ सकता है। स्वास्थ्य विशेषज्ञों ने कहा है कि जिन बच्चों का जन्म संक्रमण की शिकार मां से हुआ है, उनकी सेहत को लेकर एक बार परीक्षण जरूरी है। बच्चों में यदि किसी प्रकार की विकासात्मक समस्या दिख रही है तो समय रहते इसका निदान जरूर करा लेना चाहिए। अध्ययनकर्ताओं ने अपनी रिपोर्ट में कहा, 2020–23 का दौर सभी लोगों की सेहत को लेकर काफी चुनौतीपूर्ण रहा है। इस दौरान सभी उम्र और लिंग के लोगों को संक्रमण का शिकार पाया गया। लॉन्ग कोविड या पोस्ट कोविड को लेकर वैज्ञानिक पहले से ही चिंता जताते रहे हैं। अब हालिया अध्ययन में बच्चों की सेहत पर इसके दुष्प्रभावों को लेकर सावधान किया गया है। वैज्ञानिकों की टीम ने बताया कि संक्रमिक मां से जन्मे 28 माह (दो साल तक के) बच्चों में ऑटिज्म से संबंधित समस्याएं देखी जा रही हैं। हालांकि ऐसे बच्चों के आंकड़े कम हैं फिर भी स्वास्थ्य विशेषज्ञों का कहना है कि इस तरह के स्वास्थ्य दुष्प्रभावों को अनदेखा नहीं किया जा सकता है। रिपोर्ट में 28 महीने की उम्र में ऑटिज्म के चिंताजनक डेटा का खुलासा किया। शोध में 211 बच्चों को शामिल किया गया था, जिनका जन्म कोविड संक्रमित मां से हुआ था। इनमें से करीब 23 (जो कि 11: है) बच्चे ऑटिज्म स्पेक्ट्रम विकार के लिए सकारात्मक पाए गए। अध्ययन के ये डेटा छोटा है पर बच्चों में बढ़ती इस गंभीर समस्या को लेकर चिंता बढ़ाने वाला जरूर है। अध्ययन के दौरान शुरुआती मूल्यांकन में 14 फीसदी से अधिक बच्चों में विकास संबंधी समस्याओं के लक्षण दिखाई दिए। छह से 8 महीने की उम्र तक के 109 शिशुओं में से 13 (लगभग 12:) बच्चों में अपनी उम्र के हिसाब से विकास नहीं देखा गया। जैसे–जैसे अध्ययन में अधिक प्रतिभागियों को शामिल किया गया, इसके पैटर्न में और अधिक चिंताजनक डेटा सामने आए। संक्रमित मां से जन्मे 11 प्रतिशत से अधिक बच्चों (एक से तीन साल की आयु तक) में कई प्रकार की संज्ञानात्मक, मोटर या भाषा विकास से संबंधित समस्याएं देखी गईं। विशेषज्ञों ने कहा, सभी माता–पिता को इन जोखिमों को लेकर सावधान रहने की जरूरत है। इससे पहले साल 2021 के एक डेटा के अनुसार में दुनियाभर में अनुमानित 61.8 मिलियन (6.18 करोड़) लोग ऑटिज्म स्पेक्ट्रम का शिकार थे। ग्लोबल बर्डन ऑफ डिजीजज स्टडी के शोधकर्ताओं ने पाया कि ऑटिज्म लगभग 127 लोगों में से एक को प्रभावित करता है। ये विकार क्वालिटी ऑफ लाइफ को प्रभावित करने वाला हो सकता है। स्वास्थ्य विशेषज्ञ कहते हैं, ऑटिज्म स्पेक्ट्रम डिसऑर्डर मस्तिष्क के विकास को प्रभावित करने वाली स्थिति है जो व्यक्ति के दूसरों के साथ मेलजोल और सोचने के तरीके को प्रभावित करती है, इसके कारण प्रभावित बच्चे के सामाजिक संपर्क में भी समस्या हो सकती है। पीड़ित में अवसाद, चिंता, सोने में कठिनाई सहित कई अन्य प्रकार की व्यवहारिक समस्याओं के भी विकसित होने का खतरा हो सकता है। कुछ बच्चों में शैशवावस्था में ही ऑटिज्म स्पेक्ट्रम डिसऑर्डर के लक्षण दिखाई देने लगते हैं, जैसे आंखों का ठीक से संपर्क न हो पाना, अपना नाम सुनने पर भी प्रतिक्रिया न देना आदि।

हेयर सीरम खरीदते वक्त अवश्य रखें इन बातों का ध्यान, वरना खो जाएगी बालों की रंगत

एजेंसी

लगातार बदलते मौसम और बढ़ते प्रदूषण का सीधा असर त्वचा और बालों पर पड़ता है। अक्सर लोग अपनी त्वचा का ध्यान तो रख लेते हैं, लेकिन बालों को इग्नोर कर देते हैं। जबकि बालों की देखभाल के लिए बाजार में तमाम हेयर केयर प्रोडक्ट आते हैं। इन प्रोडक्ट्स में हेयर सीरम एक अहम हिस्सा है। इसी वजह से हर कोई आजकल हेयर सीरम का काफी इस्तेमाल करता है। ये बालों को सुलझाए रखता है और साथ ही में इसकी वजह से बाल काफी चमकदार बने रहते हैं।, लेकिन कई बार ये हेयर सीरम बालों को फायदा पहुंचाने की जगह नुकसान पहुंचा देता है। ऐसे में आपको हेयर सीरम खरीदते समय कुछ बातों का ध्यान अवश्य रखना चाहिए। यहां हम आपको कुछ ऐसे टिप्स देने जा रहे हैं, जिनका ध्यान आपको सीरम खरीदते समय करना है। हेयर सीरम खरीदते वक्त हमेशा अपने हेयर टाइप का ध्यान रखें। जैसे कि ड्राई हेयर के लिए ऐसे सीरम का चयन करें जिसमें हाइड्रेटिंग और मॉइस्चराइजिंग गुण हों। इसमें आर्गन ऑयल, जोजोबा ऑयल, या विटामिन म शामिल हो। ऑयली हेयर के लिए हल्के और नॉन–ग्रेसी फॉर्मूले वाले सीरम का चयन

करें। फ्रिज़ी हेयर के लिए हमेशा ऐसे सीरम चुनें जो एंटी–फ्रिज गुणों से भरपूर हों और बालों को स्मूथ बनाएं। डैमेज्ड हेयर के लिए हमेशा हीट प्रोटेक्शन और रिपेयरिंग प्रॉपर्टीज वाले सीरम को प्राथमिकता दें। हेयर सीरम खरीदते समय ध्यान रखें कि उसमें नेचुरल ऑयल्स अवश्य ही होने चाहिए। जैसे कि आपके हेयर सीरम में आर्गन ऑयल, कोकोनट ऑयल, या जोजोबा ऑयल होगा, तो ये ज्यादा फायदा करेगा। विटामिन म और ठ5 बालों को पोषण देने और चमक बढ़ाने में मदद करते हैं, इसलिए ये भी हेयर सीरम में अवश्य होना चाहिए। हमेशा अपने बालों की परेशानी को देखते हुए ही हेयर सीरम खरीदना चाहिए।

59 साल की उम्र में दबंग खान हैं काफी 'स्ट्रॉन्ग', जानिए सलमान की फिटनेस का राज

एजेंसी

सलमान खान 59 वर्ष की आयु में भी अपनी फिटनेस और मस्कुलर बॉडी के लिए प्रसिद्ध हैं, अपने सख्त वर्कआउट रूटीन और संतुलित आहार के कारण इस उम्र में भी फिट बने हुए हैं। बॉलीवुड के दबंग खान इस उम्र में अपनी मस्कुलर बॉडी और दमदार एब्स

से युवा अभिनेताओं को टक्कर देते हैं। वह ज्यादातर लोगों के लिए फिटनेस के रोल मॉडल रहे हैं। आज भी फिटनेस पर ध्यान देने वाले लड़के सलमान खान जैसी बॉडी बनाना चाहते हैं। फिटनेस के मामले में इस उम्र में जवान बच्चों को फेल करने वाले सलमान खान अपनी डाइट का खास ध्यान रखते हैं, साथ ही जिम में काफी पसीना बहाते हैं। आइए जानते हैं सलमान खान की फिटनेस का राज। मस्कुलर बॉडी के लिए सलमान की डाइट और वर्कआउट प्लान के बारे में जानिए। सलमान खान हफ्ते में 6 दिन वर्कआउट करते हैं, जिसमें मसल्स ट्रेनिंग पर जोर देते हैं। वह अलग–अलग एक्सरसाइज करते हैं और जिम में खूब पसीना बहाते हैं। सलमान हफ्ते में कुछ दिन लेग एक्सरसाइज को देते हैं। इसके अलावा वेट ट्रेनिंग, कार्डियो और अन्य एक्सरसाइज करते हैं। मांसपेशियों की ताकत बढ़ाने के लिए बेंच प्रेस, स्क्वैट्स, डेडलिफ्ट्स और बाइसेप कर्ल्स जैसी एक्सरसाइज शामिल हैं। हृदय स्वास्थ्य और फैट बर्न के लिए दौड़ना, साइकिल चलाना और तैराकी करते हैं। पुश–अप्स, पुल–अप्स और लंजेस जैसी एक्सरसाइज से ओवरऑल फिटनेस को बेहतर बनाते हैं। सलमान खान अपनी डाइट में प्रोटीन, कार्बोहाइड्रेट और हेल्दी फैट का संतुलन बनाए रखते हैं। सलमान खान नाश्ते में सफेद भाग, कम फैट वाल दूध और प्रोटीन शेक का सेवन करते हैं। दोपहर के खाने में सलमान दाल, रोटी, चावल, सलाद और मटन या फ्राइट फिश का सेवन करते हैं। इसके अलावा शाम के स्नैक में सेब और ड्राई फ्रूट्स खाते हैं। सलमान संतुलित और पौष्टिक आहार लेते हैं, जिसमें प्रोटीन की मात्रा का ध्यान रखते हैं। वह रात के खाने में चिकन, चावल और सलाद खाते हैं। साथ ही सोने से पहले लो फैट मिल्क प्रोटीन पीते हैं। सलमान खान देसी और घर का बना खाना पसंद करते हैं, जिसमें उनकी मां के हाथ की बनी बिरयानी विशेष रूप से शामिल है।

स्मृतिशेषः राजनीति में नैतिकता और सादगी का भी आदर्श प्रस्तुत किया मनमोहन सिंह ने

एजेंसी

डॉ. मनमोहन सिंह, जो भारत के 14वें प्रधानमंत्री रहे (2004–2014), भारतीय राजनीतिक परिदृश्य में अपनी सादगी, विद्वता और नीतिगत दृष्टिकोण के कारण सबसे अलग माने जाते हैं। उन्होंने अपनी विशेषज्ञता, समर्पण और नीति–निर्माण के कौशल से न केवल भारत की अर्थव्यवस्था को नई दिशा दी, बल्कि प्रधानमंत्री के रूप में अपनी एक विशिष्ट पहचान बनाई। वह उन नेताओं में से थे, जिन्होंने निजी प्रचार से परे रहकर भारत की सेवा की और देश को नई ऊंचाइयों तक पहुंचाया।इतिहास में उनका नाम एक ऐसे प्रधानमंत्री के रूप में दर्ज होगा, जिसने न केवल भारतीय अर्थव्यवस्था को मजबूती दी, बल्कि राजनीति में नैतिकता और सादगी का भी एक आदर्श प्रस्तुत किया। डॉ. मनमोहन सिंह भारतीय अर्थव्यवस्था को वैश्विक मानचित्र पर स्थापित करने वाले प्रमुख व्यक्तियों में से एक हैं। उनकी विद्वता का आधार उनकी अद्वितीय शैक्षणिक पृष्ठभूमि है। उन्होंने कैम्ब्रिज विश्वविद्यालय से अर्थशास्त्र में स्नातक किया, जहां उन्हें प्रतिष्ठित राइट्स पुरस्कार से सम्मानित किया गया। इसके बाद उन्होंने ऑक्सफोर्ड विश्वविद्यालय से डी.फिल की उपाधि प्राप्त की। उनका शिक्षण और शोध कार्य उन्हें अंतरराष्ट्रीय स्तर पर एक प्रख्यात अर्थशास्त्री के रूप में पहचान दिलाने में सहायक रहा। उन्होंने दिल्ली स्कूल ऑफ इकोनॉमिक्स, पंजाब विश्वविद्यालय और जावाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय में पढ़ाया। इसके अलावा, वह संयुक्त राष्ट्र के व्यापार और विकास सम्मेलन (न्छब्ज्व्) और दक्षिण आयोग जैसे अंतरराष्ट्रीय मंचों पर भी सक्रिय रहे। उनकी विशेषज्ञता को देखते हुए उन्हें भारतीय रिजर्व बैंक के गवर्नर और योजना आयोग के उपाध्यक्ष जैसे पदों पर नियुक्त किया गया। 1991 में, जब भारत गंभीर आर्थिक संकट से जूझ रहा था, तब प्रधानमंत्री पी.वी. नरसिंह राव ने उन्हें वित्त मंत्री नियुक्त किया। उनके नेतृत्व में देश ने उदारीकरण, निजीकरण, और वैश्वीकरण (एलपीजी) की नीति अपनाई, जिसने भारतीय अर्थव्यवस्था को संकट से बाहर निकाला और उसे तेजी से विकास के पथ पर अग्रसर किया। विदेशी मुद्रा भंडार जो लगभग खत्म हो गया था, उनके सुधारों के बाद स्थिर हो गया। उन्होंने आयात–निर्यात नीतियों में बदलाव, टैक्स सुधार, और औद्योगिक लाइसेंस राज को समाप्त करके व्यापार को प्रोत्साहित किया। मनमोहन सिंह अपनी सादगी और ईमानदारी के लिए पूरे राजनीतिक जीवन में आदर्श माने जाते रहे हैं। उनका व्यक्तिगत जीवन बेहद सादा था, और उन्होंने कभी भी राजनीतिक लाभ या व्यक्तिगत संपन्नता के लिए अपने पद का उपयोग नहीं किया। वह न दिखावे में विश्वास रखते थे और न ही भव्यता में। उनकी सादगी का सबसे बड़ा उदाहरण उनका निजी जीवन है। प्रधानमंत्री बनने के बाद भी वे सामान्य जीवनशैली के प्रति प्रतिबद्ध रहे। वे साधारण भोजन करते थे और हमेशा अपनी पत्नी के साथ एक सामान्य परिवार की तरह जीवन जीते रहे। उन्होंने कभी भी अपने पद का उपयोग करके अपने लिए विशेष सुख–सुविधाएं नहीं जुटाईं। ईमानदारी के मामले में मनमोहन सिंह ने राजनीति में एक उच्च मानदंड स्थापित किया। उनके पूरे करियर में व्यक्तिगत भ्रष्टाचार का एक भी मामला सामने नहीं आया। 2004 से 2014 तक, जब वे प्रधानमंत्री थे, उनके नेतृत्व में कई बार विवाद और घोटाले सामने आए, लेकिन उनकी व्यक्तिगत ईमानदारी पर कभी भी किसी ने सवाल नहीं उठाया। उनकी ईमानदारी का यह स्तर उन्हें भारतीय राजनीति में एक अलग स्थान प्रदान करता है। उनकी ईमानदारी और सादगी ने न केवल जनता का विश्वास जीता, बल्कि उनके सहयोगियों और विपक्षी दलों ने भी इसे स्वीकार किया। यह उनके चरित्र का प्रमाण है कि वे हमेशा अपने आदर्शों के प्रति प्रतिबद्ध रहे, चाहे परिस्थितियां कितनी भी चुनौतीपूर्ण क्यों न रही हों। मनमोहन सिंह की कार्यशैली अन्य नेताओं से बिल्कुल अलग थी। वे न तो लोकप्रिय नारों के सहारे राजनीति करते थे और न ही व्यक्तिगत आक्रामकता का सहारा लेते थे। उनकी राजनीति का आधार हमेशा नीतिगत निर्णय और दीर्घकालिक लाभ रहा। उन्होंने कभी भी स्वयं का व्यक्तिगत प्रचार के लिए प्रस्तुत नहीं किया। वे शांत और गंभीर स्वभाव के थे, लेकिन उनकी नीतियों और निर्णयों ने हमेशा प्रभाव छोड़ा। उदाहरण के लिए, 2008 में भारत–अमेरिका परमाणु समझौते को पारित करवाने में उनका दृढ़ संकल्प दिखा, जबकि इसके लिए उन्हें काफी राजनीतिक विरोध का सामना करना पड़ा। प्रधानमंत्री के रूप में मनमोहन सिंह ने वैश्विक मंच पर भारत की प्रतिष्ठा को बढ़ाया। उनकी शांत और सटीक कूटनीति ने भारत को एक विश्वसनीय साझेदार के रूप में प्रस्तुत किया। जी–20, ब्रिक्स और अन्य अंतरराष्ट्रीय मंचों पर उन्होंने भारत के हितों को मजबूती से रखा। उनकी विशेषज्ञता का अंदाजा इस बात से लगाया जा सकता है कि अमेरिका के पूर्व राष्ट्रपति बराक ओबामा ने उन्हें ष्वैश्विक नेताओं में से एक महान विचारक कहा था। मनमोहन सिंह ने प्रधानमंत्री बनने से पहले विभिन्न विश्वविद्यालयों में अध्यापन कार्य किया। वे छात्रों के बीच एक आदर्श शिक्षक के रूप में प्रसिद्ध थे।

उनका यह अनुभव प्रधानमंत्री के रूप में नीति–निर्माण में सहायक सिद्ध हुआ। उन्होंने अपनी सरकार के मंत्रियों और अधिकारियों को हमेशा एक मार्गदर्शक के रूप में प्रेरित किया। मनमोहन सिंह का व्यक्तित्व राजनीति तक सीमित नहीं था। वे एक विद्वान, शिक्षक और प्रशासक भी थे। प्रधानमंत्री बनने से पहले, उन्होंने योजना आयोग के उपाध्यक्ष, भारतीय रिजर्व बैंक के गवर्नर और वित्त सचिव जैसे महत्वपूर्ण पदों पर कार्य किया। इन सभी भूमिकाओं में उनका प्रदर्शन उत्कृष्ट रहा। मनमोहन सिंह अपने पूरे कार्यकाल में व्यक्तिगत विवादों से दूर रहे। हालांकि उनके कार्यकाल के दौरान कई घोटाले (जैसे 2जी स्पेक्ट्रम और कोयला आवंटन) सामने आए, लेकिन उनकी व्यक्तिगत ईमानदारी पर कभी कोई सवाल नहीं उठाया गया। विपक्ष ने उनकी चुप्पी की आलोचना की, लेकिन उनकी प्रतिबद्धता और नैतिकता पर कभी कोई संदेह नहीं हुआ। उनके कार्यकाल में भारतीय अर्थव्यवस्था ने अभूतपूर्व प्रगति की। 2004 से 2014 तक, भारत ने जीडीपी ग्रोथ में तेजी देखी, और करोड़ों लोग गरीबी रेखा से ऊपर उठे।

जैकलीन फर्नांडीज के लिए सांता क्लॉज बने सुकेश चंद्रशेखर

जेल से पत्र लिख दिया खास तोहफा

एजेंसी

ठग सुकेश चंद्रशेखर ने तिहाड़ जेल के अंदर से अभिनेत्री जैकलीन फर्नांडीज को एक और प्रेम पत्र लिखा है। कथित तौर पर सुकेश द्वारा हाथ से लिखे गए पत्र की एक कॉपी सोशल मीडिया पर वायरल हो रही है। अपने पत्र में उसने खुद को अभिनेत्री का सांता बताया और फ्रांस में एक पूरा अंगूर का बाग उपहार में देने का जिक्र किया। 25 दिसंबर की तारीख वाला यह पत्र कथित तौर पर सुकेश चंद्रशेखर द्वारा लिखा गया है और जैकलीन फर्नांडीज के लिए है। पत्र की एक कॉपी रेडिट पर वायरल हो गई है। नई दिल्ली के मंडोली जेल से लिखे गए पत्र में उन्होंने जैकलीन को अपनी बोम्मा और बेबी गर्ल कहा और उन्हें क्रिसमस की शुभकामनाएं दीं। पत्र पर 25 दिसंबर की तारीख है। उसमें लिखा है, बेबी गर्ल, तुम्हें मेरी क्रिसमस की शुभकामनाएं मेरे प्यार। साल का एक और खूबसूरत दिन और हमारा सबसे पसंदीदा त्योहार, लेकिन एक दूसरे के बिना। हालांकि, हमारी आत्माएं एक–दूसरे से मजबूती से जुड़ी हुई हैं। मैं बिल्कुल महसूस कर सकता हूं कि हम एक–दूसरे का हाथ थामे हुए हैं और एक–दूसरे को क्रिसमस की शुभकामनाएं देते हुए तुम्हारी खूबसूरत आंखों में देख रहे हैं। सुकेश ने जैकलीन को दिए अपने विशेष उपहार का भी जिक्र किया। उसने लिखा, श्तुमसे दूर होने के बावजूद, मैं तुम्हारा सांता क्लॉज बनने से नहीं रुक सकता। मेरे पास इस साल तुम्हारे लिए एक बहुत ही खास तोहफा है, मेरी जान। आज मैं तुम्हें शराब की बोतल, नहीं बल्कि प्यार के देश फ्रांस में एक पूरा अंगूर का बाग उपहार में दे रहा हूं, जिसका तुमने हमेशा सपना देखा था। अपने पत्र में उन्होंने आगे कहा कि वह जैकलीन के साथ अंगूर के बाग को देखने के लिए और इंतजार नहीं कर सकते। पत्र में आगे लिखा, मैं तुम्हारा हाथ थामे इस बगीचे में टहलने के लिए बेताब हूं।

'दृश्यम 3' को लेकर मोहनलाल का खुलासा?

बारोज अभिनेता बोले– जीतू ने स्क्रिप्ट सुनाने में लगाए कई साल

एजेंसी

मोहनलाल ने हाल ही में स्वीकार किया कि उन्होंने दृश्यम की कोई भी रीमेक पूरी नहीं देखी है, यहां तक कि अजय देवगन अभिनीत फिल्में भी नहीं देखी हैं। अभिनेता ने फिल्म दृश्यम 3 के लेकर भी अहम जानकारी शेयर की है। दृश्यम की रिलीज को 11 साल बीत चुके हैं, लेकिन निर्देशक जीतू जोसेफ की दृश्यम क्राइम–थ्रिलर जॉनर में एक बेंचमार्क बनी हुई है। दुनिया भर में 50 करोड़ रुपये से अधिक की कमाई करने वाली पहली मलयालम फिल्म, दृश्यम ने मलयालम सिनेमा की दिशा को नया आकार दिया, जिससे इसे अंतरराष्ट्रीय पहचान मिली। फिल्म दृश्यम को कई भारतीय और विदेशी भाषाओं में भी बनाया गया था और एक आधिकारिक अंग्रेजी रीमेक भी पाइपलाइन में है। दृश्यम में मोहनलाल, मीना, आशा सरथ, अंसिबा हसन, एस्तेर अनिल और सिद्दीकी ने प्रमुख भूमिकाएं निभाई। इसके सीक्वल दृश्यम 2 का प्रीमियर 2021 में हुआ, जिसे भी दर्शकों से भरपूर प्यार मिला। अब दृश्यम 3 को लेकर एक अपडेट सामने आया है। मलयालम सुपरस्टार मोहनलाल ने हाल ही में दृश्यम फ्रेंचाइजी के भविष्य के बारे में बात की। मीडिया रिपोर्ट्स के अनुसार, मोहनलाल ने कहा, "जेतू के पास दृश्यम की स्क्रिप्ट फिल्म (पहला भाग) की शूटिंग से कम से कम पांच साल पहले तैयार थी।

वॉयस ऑफ कैपिटल

हिन्दी साप्ताहिक समाचार पत्र

स्वामी, प्रकाशक, मुद्रक एवं सम्पादक सुवर्ण रेखा उपाध्याय द्वारा दक्षिता ऑफसेट, 105/128 फूलबाग खटियाना, हुसैनगंज, लखनऊ (उ0प्र0) से मुद्रित तथा 71 विज्ञान खण्ड, छोटा भरवारा, चिनहट, लखनऊ, 226028 उ0प्र0 से प्रकाशित।

प्रधान सम्पादक

सुवर्ण रेखा उपाध्याय

मोबाइल नं0

9415074053

RNI. UPHIN/2019/78747

Email

voiceofcapital24@gmail.com

समस्त विवादों का न्याय क्षेत्र लखनऊ न्यायालय ही मान्य होगा